mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-108 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

21 अप्रैल 2025 सोमवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

14 वर्षीय वैभव सूर्यवंशी...

@ पेज 7

दिल्लीवालों को अब रहने-चलने का बदलना होगा ढंग

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली का प्रदूषण कम करने के लिए सरकार ने कई नए नियम बनाने का फैसला किया है। ये नए नियम 15 मई से लागू होंगे। इसके बाद दिल्ली में रहने वाले लोगों को अपनी दिनचर्या में थोड़ा

● 15 मई से सरकार लागू करने जा रही नए नियम

बदलाव करना पड़ सकता है। कुछ लोगों को पुराने वाहन हटाने पड़ सकते हैं। शनिवार (19 अप्रैल) को दिल्ली सरकार ने इस विषय पर अहम बैठक की थी, जिसमें बड़े अधिकारी भी शामिल थे। बैठक में कई अहम फैसले लिए गए हैं, जिनकी विस्तृत रूप रेखा तैयार की जा रही है। इसके बाद सरकार नए नियम लागू कर देश की राजधानी को साफ और सुदंर बनाने की कोशिश करेगी।

बैठक के बारे में जानकारी देते हुए दिल्ली सरकार के मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने एक्स पर लिखा ÷राजौरी गार्डन में अवैध निर्माण, प्रदूषण फैलाने वाले प्रतिष्ठानों और अतिक्रमण से निपटने के लिए रणनीति और कार्रवाई पर चर्चा करने के लिए जिला मजिस्ट्रेट पश्चिम कार्यालय में एमसीडी, पीडब्ल्यूडी, डीजेबी, बीएसईएस, डीयूएसआईबी और आईएफसी के अधिकारियों के साथ एक उपयोगी बैठक आयोजित की। मुख्यमंत्री के रेखा गुप्ता जी के नेतृत्व में हम निवासियों के लिए बेहतर सड़क, जल निकासी, पानी, बिजली और स्वच्छता सेवाओं के लिए समन्वित प्रयास करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।÷

15 मई से क्या बदलेगा? 500 गज से ज्यादा के प्लाट पर निर्माण करते समय एयर क्वॉलिटी मॉनिटरिंग डिवाइस लगाना जरूरी होगा। यह डिवाइस सीधे हेडक्वॉर्टर से जुड़ा होगा। जैसे ही प्रदूषण का स्तर तय सीमा से ऊपर जाएगा, बिल्डर को चेतावनी दी जाएगी। छह मंजिला या उससे इमारत पर एंटी स्मॉग गन लगाना जरूरी होगा। मॉल्स, कॉम्प्लेक्स, सरकारी दफ्तरों और अन्य गैर-रिहायशी इमारतों पर यह नियम लागू होगा।

15 साल पुरानी गाड़ियों को दिल्ली में आते ही अलर्ट मैसेज भेजा जाएगा। निर्धारित आयु सीमा से ज्यादा पुराने वाहनों को वापस लौटना होगा। वापस नहीं जाने पर कठोर कार्रवाई होगा।

सभी जिलों के मजिस्ट्रेट को आदेश दिया गया है कि 24 घंटे के अंदर मांस की अवैध दुकानें हटवा दें। अब लाइसेंस लेने के बाद ही मांस की दुकानें खोली जा सकेंगी। सभी दुकानों को साफ-सुथरा रखना जरूरी होगा। रिहायसी इलाकों में मांस की दुकानें नहीं होंगी। अवैध दुकानें बंद नहीं होने पर उन्हें सील किया जाएगा।

वेस्ट टू एनर्जी प्लांट को ब्लू कैटेगरी में रखा गया है। अब ऐसी इंडस्ट्रीड को दो साल ज्यादा समय तक संचालन की अनुमति मिलेगी। ऐसे में ये प्लांट सात साल तक संचालन कर सकेंगे।

संक्षिप्त समाचार

अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने ईस्टर के मौके पर पोप फ्रांसिस से की मुलाकात

वेटिकन सिटी (एजेंसी)। अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने ईस्टर रविवार को पोप फ्रांसिस से एक संक्षिप्त मुलाकात की। पोप को हाल में निमोनिया हो गया था और वह इससे उबर रहे हैं। वेंस का काफिला एक विशेष द्वार से वेटिकन सिटी में दाखिल हुआ और पोप फ्रांसिस के आवास के पास पहुंचा, जबकि उस समय सेंट पीटर्स स्क्वायर में ईस्टर की प्रार्थना आयोजित की जा रही थी।

पोप फ्रांसिस ने स्वस्थ होने के लिए अपनी

जिम्मेदारियों और कार्यभार में काफी कटौती कर दी है। उन्होंने प्रार्थना के आयोजन का कार्य एक अन्य कार्डिनल को सौंप दिया है। वेटिकन ने कहा कि ईस्टर की शुभकामनाएं देने के लिए अमेरिकी उपराष्ट्रपति ने डोमस सांता मार्टा में कुछ देर पोप से मुलाकात की। प्रवासन और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के प्रशासन की प्रवासियों को सामूहिक रूप से निर्वासित करने की योजना को लेकर हाल में वेंस और पोप के बीच तीखी नोकझोंक हुई थी। जेडी वेंस से मुलाकात करने के साथ ही पोप फ्रांसिस ईस्टर रविवार के अवसर पर सेंट पीटर्स स्क्वायर में हजारों लोगों को आशीर्वाद देने हेतु कुछ समय के लिए जनता के सामने आए और सार्वजनिक कार्यक्रम में शामिल हुए। इस अवसर पर लोगों की भीड़ ने तालियां बजाकर उनका स्वागत किया। पोप को हाल में निमोनिया हो गया था और वह इससे उबर रहे हैं। पोप फ्रांसिस ने लोगों को ईस्टर की शुभकामनाएं देते हुए कहा, ''भाइयो और बहनों, ईस्टर की शुभकामनाएं!'' उनकी आवाज पहले की तुलना में अधिक प्रभावशाली प्रतीत हो रही थी।

नेपाल को हिंदू राष्ट्र बनाने की मांग, घेरा पीएम आवास

काठमांडू (एजेंसी)। नेपाल में राजशाही समर्थक राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी (आरपीपी) के सैकड़ों नेताओं और कार्यकर्ताओं ने राजशाही की बहाली और देश को हिंदू राष्ट्र घोषित करने की मांग को लेकर रविवार को फिर जोरदार प्रदर्शन किया। आंदोलनकारियों ने इस दौरान प्रधानमंत्री आवास और संसद भवन को घेर लिया और जमकर सरकार विरोधी नारे लगाकर प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने भारी पुलिस बल की मौजूदगी के बाद भी यह विरोध प्रदर्शन प्रतिबंधित क्षेत्रों में किया। करीब 1,500 प्रदर्शनकारी बिजुलीबाजार-बनेश्वर क्षेत्र में एकत्र हुए और ÷गणतंत्र मुर्दाबाद÷, ÷हमें राजशाही चाहिए÷, ÷भ्रष्ट सरकार मुर्दाबाद÷ और ÷नेपाल को हिंदू राष्ट्र घोषित करो÷ जैसे नारे लगाए। उनके हाथों में इन नारों वाले बैनर और पोस्टर भी थे। प्रदर्शन का

नेतृत्व आरपीपी अध्यक्ष राजेंद्र लिंगदेन, वरिष्ठ नेता पशुपति शमशेर राणा और नेपाल के पूर्व पुलिस महानिरीक्षक ध्रुव बहादुर प्रधान सहित कई नेताओं ने किया। प्रदर्शनकारियों के निषेधाज्ञा का उल्लंघन कर प्रतिबंधित क्षेत्रों में प्रवेश करने की घोषणा करने के बाद काठमांडू के नयां बनेश्वर, बिजुलीबाजार, मैतीघर, भद्रकाली और बालुवाटार क्षेत्रों में दंगा नियंत्रण पुलिस के हजारों कर्मियों को तैनात किया गया था।

इससे पहले रविवार सुबह काठमांडू के नयां बनेश्वर क्षेत्र में देशभर से आए हजारों स्कूली शिक्षकों ने प्रदर्शन किया। उन्होंने शिक्षा क्षेत्र में सुधार और वेतन-भत्तों में वृद्धि की मांग की। राजशाही समर्थक प्रदर्शनकारी काठमांडू के तीन अलग-अलग स्थानों पर एकत्र हुए और पुलिस के सुरक्षा घेरे को तोड़कर प्रतिबंधित क्षेत्रों में घुसने का प्रयास किया। सैकड़ों प्रदर्शनकारियों ने भद्रकाली क्षेत्र में प्रदर्शन किया, जहां सचिवालय भवन और प्रधानमंत्री कार्यालय स्थित है। एक अन्य समूह संसद भवन के सामने प्रदर्शन कर रहा था।

7वीं कक्षा की छात्रा हुई प्रेग्नेंट, मामले में नाबालिग लड़का शामिल, आक्रोश

रायगड़ा (एजेंसी)। ओडिशा के रायगड़ा जिले के काल्याण सिंहपुर इलाके से एक हैरान करने वाली खबर सामने आई है। 7वीं कक्षा में पढ़ने वाली एक नाबालिग छात्रा के गर्भवती होने का मामला सामने आया है। इस घटना की जानकारी मिलते ही पूरे इलाके में हड़कंप मच गया है और लोगों में गुस्सा एवं चिंता देखने को मिल रही हैं।

घटना सामने आने के बाद रायगड़ा जिले की बाल कल्याण समिति ने तुरंत इस मामले की गहराई से जांच शुरू की है। समिति के अधिकारी, जो बच्चों की सुरक्षा और कल्याण के लिए जिम्मेदार होते हैं, ने छात्रा से पूछताछ करते हुए कई अहम जानकारियां जुटाई हैं। जांच के दौरान यह बात सामने आई कि इस मामले में रायगड़ा सदर ब्लॉक का एक नाबालिग लड़का शामिल है। अब, प्रशासन ने जांच को और तेज कर दिया है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि आखिर यह सब कैसे हुआ? सीडब्ल्यूसी की चेयरपर्सन बिदुलता हुईका ने जानकारी दी कि जांच अभी जारी है और अभी कुछ भी पक्के तौर पर नहीं कहा जा सकता। उन्होंने कहा, ÷इस घटना की जांच पूरी गंभीरता से की जा रही है। जैसे-जैसे जांच आगे बढ़ेगी, पूरी जानकारी दी जाएगी।÷ उनका कहना है कि बच्ची की सुरक्षा और न्याय सुनिश्चित करने के लिए हर पहलू पर ध्यान दिया जा रहा है।

यह मामला सिर्फ एक बच्ची की नहीं, बल्कि पूरे सिस्टम पर सवाल खड़े करता है कि स्कूलों और हॉस्टलों में बच्चों की सुरक्षा कितनी कमजोर है। यह घटना फरवरी में हुई एक दूसरी घटना की याद दिलाती है, जब मलकानगिरी जिले के एक सरकारी हॉस्टल में 10वीं कक्षा की छात्रा ने एक बच्ची को जन्म दिया था। उस समय छात्रा बोर्ड परीक्षा देने के बाद हॉस्टल लौटी थी और वहीं उसे प्रसव पीड़ा शुरू हो गई थी।

सीलमपुर मर्डर केस, कुल 9 लोग पकड़ाए

लेडी डॉन जिकरा के बाद चाकू से हमला करने वाले दोनों मुख्य आरोपी गिरफ्तार

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के सीलमपुर में एक युवक की हत्या के मामले में पुलिस ने दोनों मुख्य आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। गुरुवार शाम इन आरोपियों ने चाकू से गोदकर 17 साल के एक लड़के की हत्या कर दी थी। इसके बाद से पुलिस को दोनों आरोपियों की तलाश थी। पुलिस ने इस मामले में पहले ही लेडी डॉन जिकरा को गिरफ्तार किया था। जिकरा ने इस घटना से जुड़े कई खुलासे किए थे। इसके बाद पुलिस ने हत्या के दोनों मुख्य आरोपियों को भी गिरफ्तार किया है।

इस मामले में दिल्ली पुलिस ने कुल 9 लोगों को पकड़ा है। इस मामले में 2 महिलाओं और 2 किशोरों सहित कुल 9 आरोपियों को गिरफ्तार/हिरासत में लिया गया है। वहीं, जिकरा दो दिन की पुलिस कस्टडी में भेजी जा चुकी है। दोनों मुख्य आरोपियों के अलावा उनका साथ देने वाले कुछ अन्य आरोपियों को भी गिरफ्तार किया गया है, पुलिस अभी भी मामले की जांच कर रही है। जांच के

दौरान जुटाए गए साक्ष्यों, तकनीकी निगरानी और गुप्त सूचना के आधार पर आरोपियों की पहचान की गई। पुलिस ने दिल्ली-एनसीआर सहित उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद, मेरठ, मुरादाबाद और अमरोहा में भी कई छापेमारी की।

दिल्ली के सीलमपुर में गुरुवार की शाम 17 साल के एक युवक कुणाल की नकाबपोश बदमाशों ने चाकू से गोदकर हत्या कर दी। युवक की हत्या करने के बाद आरोपी मौके से फरार हो गए थे। पुलिस के मुताबिक, आरोपियों की पहचान हो गई है। कुणाल हत्याकांड में लेडी डॉन जिकरा गुरुवार की रात से ही पुलिस की हिरासत में थी। जिकरा के अलावा तीन और लोगों को पुलिस की हिरासत में रखा गया था। जिकरा से पूछताछ के बाद उसे गिरफ्तार किया गया था।

पत्नी और दो बेटियों पर फेंका तेजाब

शाहजहांपुर (एजेंसी)। यूपी के शाहजहांपुर जिले में एक खौफनाक मामला सामने आया है। यहां एक शख्स ने अपनी ही पत्नी और दो बेटियों के ऊपर तेजाब फेंक दिया है। इस घटना में पत्नी और दोनों बेटियां गंभीर रूप से घायल हो गई हैं। सभी को पुलिस ने अस्पताल में भर्ती कराया है। वहीं घटना के दौरान आरोपी का बेटा मौके पर मौजूद नहीं था, लेकिन मामले की जानकारी मिलने के बाद बेटे ने पुलिस में मामले की शिकायत दर्ज कराई। बेटे के शिकायत के आधार पर पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। फिलहाल आरोपी फरार है, जिसकी तलाश की जा रही है।दरअसल, पूरा मामला निगोही थाना क्षेत्र का बताया जा रहा है। यहां एक शख्स ने अपनी ही पत्नी और दो बेटियों के ऊपर तेजाब फेंक दिया। पुलिस ने रविवार को घटना के बारे में जानकारी दी। अपर पुलिस अधीक्षक (नगर) देवेंद्र कुमार ने बताया कि टिकरी गांव में एक महिला अपनी दो बेटियों और एक बेटे के साथ किराये के मकान में रहती है। इसका पति हरदोई के शाहाबाद में रहता है। शुक्रवार की रात को जब महिला और दोनों बेटियां सो रही थीं, तभी आरोपी पति दीवार कूदकर घर में घुसा और तीनों पर तेजाब फेंक दिया।

सीएम आवास में बम होने की मिली धमकी, मचा हड़कंप

तीन घंटे तक चली जांच में कुछ भी नहीं मिला

पुडुचेरी (एजेंसी)। पिछले कुछ दिनों से कभी एयरपोर्ट तो कभी किसी ट्रेन में बम होने की धमकियां मिल रही हैं। इस बीच सीएम आवास में ही बम होने की धमकी मिलने का मामला सामने आया है। किसी अज्ञात व्यक्ति ने एक ई-मेल के माध्यम से पुडुचेरी के सीएम आवास में बम होने की धमकी दी है। वहीं सीएम आवास में बम होने की सूचना मिलते ही पुलिस महकमें में हड़कंप मिल गया। आनन-फानन में पुलिस और बम निरोधक दस्ते की टीम खोजी कुत्तों के दल के साथ सीएम आवास के लिए रवाना हुआ। यहां तीन घंटे तक चली जांच में कुछ भी नहीं मिला, जिसके बाद इसे महज अफवाह बताया गया। दरअसल, केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी के मुख्यमंत्री के आवास पर बम होने की धमकी मिलने के बाद से हड़कंप मच गया। किसी अज्ञात व्यक्ति ने ई-मेल के माध्यम से यह धमकी दी थी। ये धमकी पुडुचेरी के सीएम एन रंगासामी के आवास और पास के ही डेलार्शपेट के दो होटलों में बम होने से जुड़ी हुई थी। शनिवार को इन सभी जगहों पर बम होने की बात कहते हुई ई-मेल के जरिए यह धमकी दी गई थी। पुलिस ने बताया कि होटल प्रबंधन ने बम होने के मामले की जानकारी उन्हें दी थी। वहीं बम की सूचना

मिलते ही हड़कंप मच गया।

इसके बाद आनन-फानन में साइबर अपराध के जासूस और बम निरोधक दस्ते की टीम खोजी कुत्तों के दम के लिए रवाना हुई। ये टीमें होटल और मुख्यमंत्री के आवास पर पहुंचीं। इसके बाद करीब तीन घंटे तक चप्पे-चप्पे पर तलाशी ली गई। हालांकि जांच टीम को मौके से कुछ भी नहीं मिला। पुलिस के मुताबिक जब सीएम आवास की तलाशी ली जा रही थी तो वह मंदिर में पूजा-अर्चना करने के लिए गए हुए थे। वहीं पुलिस का कहना है कि बम की सूचना महज अफवाह थी। हालांकि इस मामले में केस दर्ज कर लिया गया है।

कर्नाटक के पूर्व डीजीपी का मर्डर

घर में मिला शव; पत्नी पर हत्या की आशंका

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु से सामने आ रही है। यहां बेंगलुरु में कर्नाटक के पूर्व डीजीपी ओमप्रकाश की हत्या कर दी गई है। वहीं आशंका जताई जा रही है कि उनकी पत्नी ने ही चाकू घोंपकर उनकी हत्या की है। हालांकि पुलिस अभी मामले की जांच कर रही है। बता दें कि बेंगलुरु के एचएसआर लेआउट स्थित उनके घर में उनका शव बरामद हुआ है। घटना के समय घर में उनकी पत्नी और बेटी ही मौजूद थीं, जो कि घर के लिविंग रूम में थीं। पत्नी ने ही कॉल करके पुलिस को इसकी जानकारी दी थी।

दरअसल, कर्नाटक के पूर्व डीजीपी ओमप्रकाश की हत्या का मामला सामने आया है। उनका शव बेंगलुरु स्थिति उनके आवास में खून से लतपथ हालत में मिला है। पूर्व डीजीपी ओमप्रकाश बेंगलुरु के एचएसआर लेआउट में परिवार के साथ

रह रहे थे। रविवार की दोपहर का उनका शव उनके आवास में मिला है। वहीं सूचना मिलते ही पुलिस की टीम भी मौके पर पहुंच गई है। मामले की जांच की जा रही है। जांच करने पर पता चला कि उनकी हत्या की गई है।

पुलिस को संदेह है कि पूर्व डीजीपी ओमप्रकाश की हत्या उनकी पत्नी ने की है, क्योंकि उनकी पत्नी और बेटी घर के लिविंग रूम में थीं। वहीं पुलिस सूत्रों ने बताया कि पत्नी ने ही पुलिस को फोन करके हत्या की जानकारी दी थी, लेकिन जब पुलिस टीम उनके घर पहुंची तो उन्होंने दरवाजा खोलने से इनकार कर दिया। फिलहाल मामले की जांच की जा रही है। फिलहाल पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। उनके शव पर चोट के निशान भी मिले हैं। वहीं उनकी पत्नी पल्लवी से पूछताछ की जा रही है।

कूनो से मंदसौर पहुंचे 'प्रभास' और 'पावक'

सीएम मोहन यादव ने दो चीतों को खुले बाड़े में छोड़ा

भोपाल (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के सीएम डॉ. मोहन यादव ने मालवा क्षेत्र के मंदसौर में गांधी सागर अभयारण्य की भूमि पर प्रभास और पावक चीतों को खुले बाड़े में छोड़ा। चीतों के फर्राटे के साथ 20 अप्रैल रविवार का दिन मालवा की भूमि के लिए ऐतिहासिक दिवस के रूप मे दर्ज हो गया। देश में पहली बार अंतर्राज्यीय स्तर पर चीतों का पुनर्वास हुआ है। यह दोनों चीते आज श्योपुर कूनो से मंदसौर के गांधी सागर अभयारण्य पहुंचे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने समारोह पूर्वक इन चीतों को खुले बाड़े में छोड़ा। यहां पर्याप्त संख्या में चीतल चिंकारा और छोटे जानवर हैं। दोनों 6 वर्षीय युवा चीते कूनो राष्ट्रीय उद्यान में खुले में ही घूम कर शिकार कर रहे थे, इसलिए इन्हें सीधे खुले बाड़े में छोड़ा गया है।

इस मौके पर सीएम डॉ. मोहन यादव ने

कहा कि चीता प्रोजेक्ट प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विश्व में सबसे अधिक मध्य प्रदेश में सफल हुआ है। पुनर्वास के बाद श्योपुर के कूनो में दुनिया में सबसे अधिक चीतों का जन्म हुआ है। मालवा की भूमि पर हम चीतों का स्वागत करते हैं। चीतों के आने से मंदसौर और नीमच जिलों मे पर्यटन की संभावनाओं को पंख लग जाएंगे। राजस्थान और मध्य प्रदेश के सीमावर्ती जिलों में पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। स्थानीय लोगों को रोजगार के नये अवसर मिलेंगे, उनके जीवन स्तर में भी सुधार होगा। पर्यटकों की संख्या बढ़ने से अर्थव्यवस्था में भी सुधार होगा। वन्य पर्यावरण की दृष्टि से मध्य प्रदेश की धरा पर चीतों का सफलतापूर्वक पुनर्वास किया गया है।

श्योपुर के कूनो नेशनल पार्क से गांधी सागर अभयारण्य के लिए दो नर चीते प्रभास और पावक को 20 अप्रैल, रविवार की सुबह रवाना किया गया था। सीसीएफ उत्तम कुमार शर्मा और डॉक्टर ओंकार अचल सहित 20 लोगों की टीम चीतों के साथ गांधी सागर अभयारण्य पहुंची। यह टीम गांधी सागर में 7 दिन रुकेगी।

जज पर पत्नी को धोखा देकर तलाक लेने और दूसरी महिला के साथ रहने के लगे आरोप

शिवपुरी (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के शिवपुरी में एक जज पर आरोप हैं कि उसने अपनी पत्नी से धोखे से तलाक लिया और फिर एक दूसरी महिला के साथ घर बसा लिया। जिस महिला के साथ घर बसाया, वह भी पहले से शादीशुदा थी। महिला भी अपने पति को छोड़कर जज के साथ रहने के लिए आ गई। ये महिला जज की प्रेमिका बताई जा रही है। इस प्रेम कहानी के उलझे रिश्तों में दोनों पीड़ित (जज की पत्नी और जज की प्रेमिका का पति) अब न्यायालय से इंसाफ की गुहार लगा रहे हैं।

शिवपुरी निवासी राकेश (बदला हुआ नाम) ने अपनी पत्नी रानी को पढ़ा-लिखाकर जज बनाने का सपना देखा था। दोनों ने प्रेम विवाह किया था, राकेश ने अपनी पत्नी को पढ़ाकर बीए से लेकर पीजीडीसीए तक की डिग्रियां दिलवाईं। दिन-रात मेहनत की ताकि पत्नी के सपनों को उड़ान दे सकें। लेकिन किसे पता था कि उड़ान भरने के नाम पर राकेश की पत्नी रानी किसी और के साथ चली जाएगी। साल 2018 में रानी की मुलाकात जज से हुई, यहां दोनों एक ही कोचिंग में साथ में जज बनने की तैयारी कर रहे थे। जज ने गाइड बनकर रानी के दिल में जगह बनाई और पति के साथ धोखे का खेल शुरू हो गया।

एमपी ट्रांसको वेबसाइट पर पेंशनरों के लिये बढ़ी सुविधाएं -ऊर्जा मंत्री तोमर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने बताया है कि मध्यप्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी (एमपी ट्रांसको) ने अपने पेंशनरों और उनके आश्रितों के लिए ऑनलाइन सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए अपनी आधिकारिक वेबसाइट पर नई सुविधाएँ शुरू करने के बाद अब उसमें और अनेक नई सुविधाओं को जोड़ा है। अब पेंशनर कहीं से भी डिजिटल जीवन प्रमाण-पत्र सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। एमपी ट्रांसको के मुख्य वित्तीय अधिकारी श्री मुकुल महरोत्रा ने बताया कि पहले पेंशनरों या उनके आश्रितों को जीवन प्रमाण-पत्र जमा करने के लिए एमपी ट्रांसको के कार्यालयों में जाना पड़ता था, लेकिन अब यह आवश्यकता समाप्त कर दी गई है। नई सुविधा के साथ, डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र सेवा अब वेबसाइट पर आसानी से उपलब्ध है। पेंशनर अब अपनी पेंशन की स्थिति की जांच कर सकते हैं और वर्तमान जीवन प्रमाण-पत्र की वैधता भी ऑनलाइन देख सकते हैं। इससे उन्हें समय पर डिजिटल जीवन प्रमाण-पत्र जमा करने में मदद मिलेगी। इसके अतिरिक्त, वेबसाइट पर एक समर्पित टैब भी जोड़ा गया है, जहाँ पेंशनर अपनी पेंशन स्लिप देख और डाउनलोड कर सकते हैं। इनकम टैक्स फॉर्म-16 एक्सेस कर सकते हैं और डाउनलोड कर सकते हैं। वर्तमान में, एमपी ट्रांसको के सेवानिवृत्त कर्मचारियों की पेंशन और पारिवारिक पेंशन यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के माध्यम से वितरित की जाती है, जिसमें 4,285 पेंशनर जुड़े हुए हैं। भविष्य में इस प्रणाली को अन्य बैंकों से भी जोड़ने की योजना है।

एम्स की बाउंड्री वॉल के पास कर्मचारियों ने कचरे में लगाई आग

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। एम्स के गेट नंबर 2 के पास गुरुवार शाम करीब 5 बजे सर्विस रोड की बाउंड्री में पड़े कचरे में 2 कर्मचारियों ने आग लगा दी। इससे यहां लगे 20 से ज्यादा पेड़ झुलस गए। कचरा जलाने वाले कर्मचारी एम्स की फायर सेफ्टी के लिए हायर की गई एजेंसी के कर्मचारी हैं। एम्स के डायरेक्टर डॉ. अजय सिंह का कहना है कि डीडीए को निर्देश दिए हैं कि वे तत्काल इस मामले में कार्रवाई के लिए लोकल प्रशासन से संपर्क करें। एम्स के गेट नंबर 2 से लगी बाउंड्री वॉल के पास पेड़ों की पत्तियों के कचरे में आग लगा दी गई। इससे 20 से अधिक छोटे-बड़े पेड़ झुलस गए। एक बार में जलाकर साफ कर रहे हैं... यहां से गुजर रहे वकील हर्षवर्धन तिवारी व अन्य लोगों ने आपत्ति ली। तिवारी के मुताबिक कर्मचारियों का तर्क यह था कि यहां कचरे में बारबार आग लगती है, इसलिए एक बार में पूरा कचरा जलाकर साफ किया जा रहा है।

भोपाल सहित 6 जिलों के डीईओ और डीपीसी को कारण बताओ नोटिस

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। लोक शिक्षण आयुक्त ने भोपाल, मुरैना, सीहोर, गुना, झाबुआ, और आगर मालवा के जिला शिक्षा अधिकारियों और जिला परियोजना समन्वयकों को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। इन अधिकारियों को उनके जिलों में प्राइवेट स्कूलों के सत्यापन का काम चार माह बाद भी नहीं करने के कारण नोटिस दिए गए हैं। आयुक्त शिल्पा गुप्ता ने 25 अप्रैल तक प्राइवेट स्कूलों की वेरिफिकेशन रिपोर्ट अपलोड करने के निर्देश दिए हैं। नोटिस में कहा गया है कि संचालनालय द्वारा पिछले साल एजुकेशन पोर्टल पर 12 दिसंबर और 17 दिसंबर को अपलोड किए गए सर्कुलर में संबंधित अफसरों के जिलों में सभी प्राइवेट स्कूलों के सत्यापन के निर्देश दिए गए थे। यह काम 28 दिसंबर तक पूरा किया जाना था। लेकिन, यह काम तय समय सीमा में नहीं हुआ। इस साल अप्रैल में भी यह निर्देश दिए गए थे। इसके बाद भी आपके जिलों में कार्य शून्य स्थिति में है।

मंत्री विश्वास सारंग ने किया ऐशबाग आरओबी का निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने शनिवार को नरेला विधानसभा अंतर्गत ऐशबाग रेलवे ओवर ब्रिज का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान मंत्री श्री सारंग ने निर्माण कार्य में हो रही देरी को लेकर नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि निर्धारित समय-सीमा में कार्य को गुणवत्ता के साथ पूर्ण किया जाए, जिससे जनता को शीघ्र लाभ मिल सके।

मंत्री श्री सारंग ने बताया कि ऐशबाग आरओबी का लगभग 95 प्रतिशत निर्माण कार्य पूर्ण किया जा चुका है। उन्होंने निर्माण कार्य में तेजी लाते हुए 15 जून तक कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिये हैं। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि क्षेत्र में यातायात के बढ़ते दबाव से ट्रैफिक की बड़ी समस्या थी, वहीं अब ऐशबाग स्टेडियम के सामने आरओबी के निर्माण से महामाई बाग, पुष्पा नगर सहित स्टेशन क्षेत्र से जो लोग नये भोपाल की ओर जाते थे, उनके लिये यह बहुत बड़ी सौगात होगी।

मंत्री श्री सारंग ने कहा कि नरेला विधानसभा में क्षेत्रवासियों की सुविधा के लिये 10-10 फ्लाईओवर की शुरूआत की गई है। यही कारण है कि नरेला विधानसभा को फ्लाईओवर विधानसभा के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने कहा कि ऐशबाग स्टेडियम के

सामने का फ्लाईओवर संपूर्ण क्षेत्र की यातायात व्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन लायेगा, जिससे नागरिकों को बड़ी सुविधा मिलेगी। हमने यह सुनिश्चित किया है कि अब डैडलाइन को नहीं बढ़ाया जायेगा।

मंत्री श्री सारंग ने आरओबी के निरीक्षण के दौरान ऐशबाग स्टेडियम के समीप पार्किंग निर्माण हेतु भी निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि स्टेडियम को रेनोवेट करने के साथ ही स्टेडियम कार्यालय के समक्ष स्थित पॉवर हाउस को दूसरी ओर शिफ्ट कर यहां व्यवस्थित पार्किंग स्थल बनाया जाये। इस अवसर पर लोक निर्माण विभाग (सेतु), जिला प्रशासन, यातायात व नगर निगम के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

पराली जलाने पर 15 हजार जुर्माने के आदेश

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने एक दिन पहले ही पराली जलाने पर 15 हजार रुपए तक जुर्माने के आदेश जारी किए थे। इसके तहत गांवों में पटवारी, ग्राम विस्तार अधिकारी और पंचायत सचिव को कार्रवाई करनी है, जबकि शहरों में पटवारी और वार्ड प्रभारी को जिम्मेदारी दी गई है। हैरानी की बात यह कि न अधिकारी निकले न पटवारी। शुक्रवार को शहर और शहर की सीमा के गांवों में बेधड़क पराली जलती रही। नासा के सैटेलाइट डेटा के मुताबिक, बीते 15 दिनों में सबसे ज्यादा पराली जलाने की 2,571 घटनाएं उज्जैन में दर्ज हुईं। दूसरे नंबर पर 2,530 घटनाओं के साथ सीहोर रहा। तीसरे नंबर पर भोपाल है। यहां 862 बार पराली जलाई गई। कोलार रोड से मंडीदीप

की ओर जाने वाली सड़?क पर दोनों ओर भारी तादाद में खेतों में पराली जलाई गई है। थुआखेड़ा क्षेत्र में तो रहवासी कॉलोनी के पास पराली जलाई गई है।

थुआखेड़ा का यह इलाका पटवारी प्रदीप गौर के जिम्मे है। इनसे संपर्क किया गया, लेकिन उन्होंने जवाब नहीं दिया। नीलबड़ से फंदा जाने वाली रोड पर ग्राम मुगालिया गांव में मुख्य सड़क के दोनों ओर भारी तादाद में खेतों में पराली जलाई गई है। आधे से ज्यादा खेतों में पराली जलाने के बाद खेतों में हल भी चला दिया गया है।

जानकारी भेजेंगे = जुर्माने का आदेश आज ही मिला है। सभी ग्रुप में डाला है। जानकारी जुटाकर अधिकारियों को भेजेंगे। - नरेंद्र रायकवार, पटवारी केरवा डेम के जंगल और बैरागढ़ चीचली के बीच नहर के दोनों ओर खेतों में बहुतायत में पराली जलाई गई है।

उद्यानिकी के साथ खाद्य प्र-संस्करण हब के रूप में उभरा मध्यप्रदेश

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उद्यानिकी एवं खाद्य प्र-संस्करण के क्षेत्र में जिस गति से मध्यप्रदेश ने अपनी पहचान राष्ट्रीय स्तर पर बनाई है, उससे प्रदेश की उद्यानिकी फसलों के प्रति देश और विदेशों में खासी मांग भी बढ़ रही है। इससे प्रदेश के किसानों को आर्थिक संबल भी मिल रहा है। मध्यप्रदेश उद्यानिकी के साथ खाद्य प्र-संस्करण का मुख्य हब बन कर उभरा है। गत फरवरी माह में भोपाल में हुई ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में निवेशकों से उद्यानिकी क्षेत्र में 4 हजार करोड़ रूपये से अधिक का निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए। यह निवेश प्रस्ताव मध्यप्रदेश के उद्यानिकी क्षेत्रों में हुए नवाचारों और बड़े पैमाने पर हो रहे उत्पादन को दर्शाता हैं। मध्यप्रदेश में गत 5 वर्षों में उद्यानिकी के रकबा में 23.72 प्रतिशत वृद्धि हुई। वर्ष 2019-20 में उद्यानिकी फसलों का रकबा 21.75 लाख लाख हेक्टेयर था जो वर्ष 2023-24 में बढ़कर 26.91 लाख हैक्टेयर हो गया है। मध्यप्रदेश में गत 20 वर्षों में छोटे के साथ बड़ी कृषि-जोत रखने वाले किसान भाइयों ने %कैश-क्रॉप% के रूप में उद्यानिकी फसलों को लेना शुरू कर दिया है इस कारण उद्यानिकी फसलों (फल, सब्जी, मसाला पुष्प एवं औषधियों) का रकबा 4 लाख 67 हजार हैक्टेयर से 27 लाख 71 हजार हैक्टेयर यानिकी लगभग 500 प्रतिशत की तथा उत्पादन 35 लाख 40 हजार मीट्रिक टन से बढ़कर 417 लाख 89 हजार मीट्रिक टन हो गया। इस तरह उत्पादन में 1000 प्रतिशत की ऐतिहासिक वृद्धि हुई है। परिणामस्वरूप मध्यप्रदेश उद्यानिकी के साथ खाद्य प्र-संस्करण का मुख्य हब बन रहा है। मध्यप्रदेश की जलवायु उद्यानिकी फसलों के लिये अनुकूल होने के साथ सिंचाई सुविधाएँ भी अन्य राज्यों से बेहतर है। प्रदेश का कुल उद्यानिकी रकबा का 5 लाख 54 हजार हैक्टेयर मध्यप्रदेश में उद्यानिकी फसलों की उत्पादकता 15.02 टन प्रति हैक्टयर है, जो देश की उद्यानिकी फसलों की औसत उत्पादकता 12.19 टन प्रति हैक्टेयर से 23.21 प्रतिशत अधिक है। खाद्यान फसलों की उत्पादकता 2.82 टन प्रति हैक्टेयर की तुलना में उद्यानिकी फसलों की उत्पादकता 15.02 टन प्रति हैक्टेयर है, जो 5 गुनी से अधिक है। आने वाले वर्षों में मध्यप्रदेश में उद्यानिकी (बागवानी) प्रदेश के किसान भाइयों की आय का मुख्य घटक बनकर उभरेगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की सरकार द्वारा पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के नदी जोड़ो सपने को सकार करने के लिये परियोजनाओं को धरातल पर लाने का प्रयास प्रारंभ किया गया है।

रात में भी मिल सकेगी पीएमश्री एयर एंबुलेंस की सुविधा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्य सरकार की पीएमश्री एयर एंबुलेंस सेवा में एक बड़ी सुविधा जुड़ने जा रही है। इसमें रोगियों को उपचार के लिए रात में भी बड़े अस्पताल में पहुंचाया जा सकेगा। इसके लिए दो इंजन वाले हेलीकाप्टर का उपयोग किया जाएगा, जो रात में भी उड़ सकेंगे। इस सुविधा के लिए सेवा देने वाली कंपनी और स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के बीच सहमति बन चुकी है। टेंडर प्रक्रिया भी प्रारंभ हो गई है। अभी गैर आयुष्मान हितग्राहियों को यह सुविधा लगभग दो लाख रुपये प्रति घंटे के हिसाब से मिल रही है। रात में हेलीकाप्टर सेवा के दरें अभी निर्धारित नहीं हुई हैं, पर पुरानी दरों की तुलना में इसमें थोड़ा-बहुत अंतर ही हो सकता है। आयुष्मान हितग्राहियों के लिए इसकी सुविधा निर्धारित 80 प्रकार ही आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाओं के लिए मिल रही है। इसमें रोगी के लिए 50 लाख का दुर्घटना बीमा का प्रविधान भी है। संभाग के अंदर रोगी के निशुल्क परिवहन के लिए जिले के मुख्य

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी की अनुशंसा पर जिला कलेक्टर संभाग के अंदर स्वीकृति प्रदान करते हैं। मेडिकल कालेज में भर्ती गंभीर रोगी को संभाग के बाहर एंबुलेंस की स्वीकृति डीन की अनुशंसा पर संभाग आयुक्त और राज्य के बाहर के लिए संचालक चिकित्सा शिक्षा देते हैं।

19 दिन पहले हलाली डेम में छोड़ा यूरेशियन गिद्ध अफगानिस्तान पहुंचा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। यूरेशियन ग्रिफिन गिद्ध को रेस्क्यू कर वापस उसके देश भेजने के लिए चलाया गया अभियान सफल होता लग रहा है। 29 मार्च को हलाली डेम में छोड़ा गया यह गिद्ध अफगानिस्तान पहुंच गया है। यहां से कजाकिस्तान बॉर्डर की ओर आगे बढ़ रहा है। अगर 50 किलोमीटर की दूरी और तय करेगा तो उज्बेकिस्तान पहुंच जाएगा।

गिद्ध को लगाए गए सैटेलाइट रेडियो कॉलर के माध्यम से उस पर नजर रखी जा रही है। यह अब तक 19 दिन में 2100 किलोमीटर की दूरी तय कर चुका है। यानी गिद्ध एक दिन में औसतन 110 किलोमीटर की दूरी तय कर रहा है। चूंकि, गिद्ध दिन के वक्त ही उड़ान भरता है।

भारत में तेज थी रफ्तार- बताया गया है कि जब तक गिद्ध भारत देश की सीमा में था उसकी रफ्तार 100 किमी प्रतिदिन से भी ज्यादा थी। देश में रहते हुए गिद्ध रात में जंगलों में ही रुक रहा था। यह गिद्ध 8 दिसंबर 2024 को सतना के नागौद में ग्रामीण क्षेत्र से रेस्क्यू किया गया था। बेहद कमजोर होने पर इलाज के लिए 29 जनवरी को वन विहार लाया गया। यहां 15 दिन क्वारेंटाइन में रखकर गिद्ध संवर्धन एवं प्रजनन केंद्र के माध्यम से इलाज किया गया।

अयोध्या नगर मार्केट में अवैध, अव्यवस्थित दुकानदारों पर करें चालानी कार्रवाई-राज्यमंत्री कृष्णा गौर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने शनिवार को गोविंदपुरा क्षेत्र में अयोध्या नगर वार्ड 68 के क्षेत्रवासियों से जनहित से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की और कहा कि जनसुविधा और व्यवस्था बनाए रखना हमारी प्राथमिकता है। सरयू सरोवर पार्क की बाउंड्री के चारों ओर लगने वाली सब्ज़ी मंडी के कारण उत्पन्न हो रही जाम की समस्या को गंभीरता से लेते हुए अधिकारियों को निर्देश दिए कि अवैध और अव्यवस्थित रूप से लगने वाले ठेलों पर चालानी कार्रवाई की जाए और सब्ज़ी विक्रेताओं को निर्धारित सीमा के अंदर ही रोका जाए। यह सुनिश्चित करें कि किसी भी

प्रकार से यातायात बाधित न हो। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने भ्रमण के दौरान अयोध्या नगर सेक्टर-ए और एच में सीवेज लाइन और सड़क निर्माण को लेकर अधिकारियों को निर्देश दिए कि अमृत फेज़-2 योजना के अंतर्गत पहले सीवेज लाइन का कार्य हो, तत्पश्चात तय समय सीमा में गुणवत्तापूर्ण सड़क निर्माण सुनिश्चित करें। अयोध्या नगर - एन सेक्टर स्थित मां दुर्गा मंदिर के पास सड़क चौड़ीकरण, पार्क और मंदिर सौंदर्यीकरण सहित विभिन्न मुद्दों के त्वरित समाधान हेतु अधिकारियों को निर्देशित किया। सेक्टर एल एवं एम के रहवासियों ने स्ट्रीट लाइट, सीवेज व्यवस्था, मंगल भवन निर्माण एवं सफाई से जुड़ी समस्याओं के निराकरण के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि इन विषयों का त्वरित और स्थायी समाधान सुनिश्चित किया जाए। रॉयल एवेन्यू, अयोध्या नगर में रहवासियों से सीवेज लाइन की समस्या को संज्ञान में लेते हुए तत्काल अमृत फेज-2 के अंतर्गत कार्य प्रारंभ करने के निर्देश दिए। अयोध्या नगर चौराहा गीत बंगले के रहवासियों ने कम प्रेशर से पानी मिलने की बात कहीं। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने अधिकारियों को जब तक प्रेशर लाइन ठीक नहीं हो जाती, तब तक ट्रैंकर से स्पलाई बढ़ाने के निर्देश दिए हैं, ताकि भीषण गर्मी में पानी की समस्या से लोगों को नहीं जूझना पड़े।

जन-भागीदारी से जल गंगा संवर्धन अभियान'' बना जन-आंदोलन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। जल गंगा संवर्धन अभियान प्रदेश में एक व्यापक जन-आंदोलन बन चुका है। राज्य सरकार खेत का पानी खेत में और गांव का पानी गांव में'' के सिद्धांत पर जल संरक्षण की दिशा में 'जल गंगा संवर्धन अभियान' चला रही है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के आहवान पर जल संरक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए वर्षा जल संचयन के साथ नदियों एवं पारम्परिक जल स्त्रोतों का पुनर्जीवन और जल संरक्षण तकनीकों को अपनाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है।

जल गंगा संवर्धन अभियान बरगांव के विद्यार्थियों के सहयगो से मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद ने डिंडोरी जिले के शहपुरा विकास खंड में गांव बरगांव से सटी सिलगी नदी

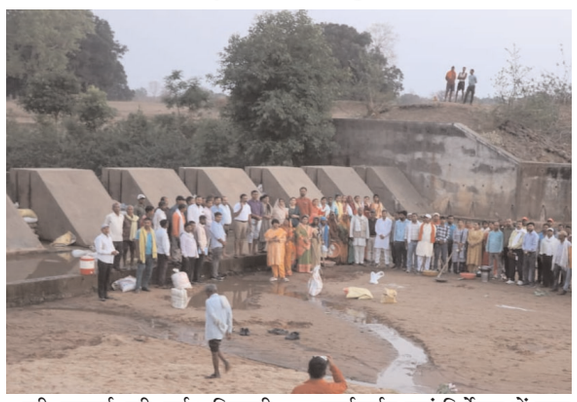

की सफाई की गई। सिलगी नदी घाट में बच्चे स्नान करते हैं। साथ ही विशेष उत्सवों पर आसपास के ग्रामीण भीनदी स्नान का मुण्य लेते हैं। नदीं अत्यधिक चोई जमा हो जाने से स्नान में बाधा उत्पन्न हो रही थी। गांव के छात्रावासों में रह रहे विद्यार्थियों के सहयोग से नदी की सफाई की गई।

शहडोल जिले में कलेक्टर डॉ. केदार सिंह के मार्गदर्शन एवं निर्देशन में चल रहे 'जल गंगा संवर्धन' अभियान के अंतर्गत' जल के बिना जीवन संभव नहीं' नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जल का महत्व समझाय गया। नुक्कड़ नाटक में जल ही जीवन है जल को भविष्य के लिए करें सुरक्षित आदि स्लोगन्स से जल संरक्षण का महत्व बताया गया। शहडोल के ही गांव भुरसी हर बार गर्मी के मौसम में सूख जाने वाली नदी अखड़ार में स्थानीय ग्रामीणों के सहयोग से चलाएस गए अभियान से किए गए सफाई कार्य से नदी स्वच्छ जल धारा प्रवाहित होने लगी। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत उमरिया की भडारी नदी में नगर परिषद के कर्मचारियों तथा स्थानीय निवासियों के श्रमदान से नदी की सफाई की। श्रमदानियों ने जल स्त्रोतों को साफ रखने, उसके आसपास गंदगी नही करने और जल की एक-एक बूंद के संरक्षण की शपथ भी ली।

जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत बुरहानपुर जिले के समस्त नगरीय निकायों में जल स्त्रोतों तथा नदी, तालाबों, कुओं, बावड़ी तथा अन्य जल स्त्रोतों के संरक्षण एवं पुनर्जीवन हेतु जीर्णोद्धार एवं सफाई के कार्य किये जा रहे हैं।

रेल यात्रियों के लिए बड़ी मुश्किल, 26 ट्रेनें अप्रैल और मई में रहेंगी कैंसल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उत्तर पूर्व रेलवे के गोरखपुर मंडल के अंतर्गत तीसरी लाइन के इंटरलाकिंग कार्य के चलते ट्रेनों का संचालन प्रभावित होगा। इस कारण भोपाल मंडल से गुजरने वाली 26 ट्रेनों को अलग-अलग तिथियों में निरस्त किया है। रेलवे प्रशासन द्वारा जारी सूचना के अनुसार ये ट्रेनें 17 अप्रैल से 7 मई तक अलग-अलग दिनों में निरस्त रहेंगी। प्रभावित ट्रेनों में पुणे, कोचुवेली, सिकंदराबाद, यशवंतपुर, छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस, ओखा, पनवेल, बांद्रा टर्मिनस तथा लोकमान्य तिलक टर्मिनस जैसे गंतव्यों से चलने वाली प्रमुख लंबी दूरी की ट्रेनें शामिल हैं। पुणे-गोरखपुर तीन मई, गोरखपुर-कोचुवेली 27 अप्रैल, 1, 2, 4 मई, कोचुवेली-गोरखपुर 30 अप्रैल, 4, 6, 7 मई, गोरखपुर-सिकंदराबाद 30 अप्रैल। सिकंदराबाद-गोरखपुर एक मई। गोरखपुर-यशवंतपुर 26 अप्रैल। सिकंदराबाद-गोरखपुर 28 अप्रैल। गोरखपुर-एलटीटी 22 एवं 29 अप्रैल। एलटीटी-गोरखपुर 23, 30 अप्रैल। एलटीटी-गोरखपुर 27 अप्रैल से तीन मई। गोरखपुर-एलटीटी 27 अप्रैल से तीन मई। गोरखपुर-यशवंतपुर 22 व 29 अप्रैल।

यशवंतपुर-गोरखपुर 24 अप्रैल व एक मई। गोरखपुर-पुणे 24 अप्रैल व एक मई। पुणे-गोरखपुर 26 अप्रैल व तीन मई। गोरखपुर-ओखा 24 अप्रैल व एक मई। ओखा-गोरखपुर 27 अप्रैल व चार मई तक निरस्त रहेगी। भोपाल में गुरुवार को रेलवे यात्री मौसम साफ होने के बावजूद परेशान हुए। कई प्रमुख ट्रेनें 30 मिनट से लेकर 2 घंटे तक की देरी से भोपाल रेलवे स्टेशन पहुंचीं। वहीं, कुछ ट्रेनों की लेटलतीफी तो 3 से 6 घंटे तक दर्ज की गई, जिससे यात्रियों को लंबा इंतजार करना पड़ा। स्टेशन पर यात्रियों की खासी भीड़ देखने को मिली, लेकिन जानकारी के अभाव और ट्रेनों के अनिश्चित आगमन समय ने उनकी परेशानी को और बढ़ा दिया।

अब सरकारी स्कूलों के टीचर्स की अटेंडेंस चेहरा दिखाकर लगेगी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। अब सरकारी स्कूलों से शिक्षक गायब नहीं रह पाएंगे। इसके लिए स्कूल शिक्षा विभाग ने नई पहल की है। प्रदेश के करीब चार लाख शिक्षकों की उपस्थिति सार्थक एप के माध्यम से ऑनलाइन दर्ज होगी। यह एप शिक्षकों की लोकेशन दर्ज करेगा साथ ही आनलाइन चेहरा दिखाई देने पर ही उपस्थिति लगेगी। गर्मी की छुट्टियों के बाद स्कूल खुलेंगे तो जुलाई से शिक्षकों की ऑनलाइन उपस्थिति अनिवार्य कर दी जाएगी। प्रदेश के 99,145 स्कूलों में से केवल 8,051 स्कूलों में ही शिक्षकों की ऑनलाइन उपस्थिति एम शिक्षा मित्र एप से दर्ज की जा रही है यानी 91,094 स्कूलों में इसका उपयोग ही नहीं हो रहा है। जबकि यह व्यवस्था अनिवार्य की गई थी। प्रदेश के सरकारी स्कूलों में शिक्षकों की उपस्थिति को लेकर सवाल खड़े होते रहते हैं।

स्कूल शिक्षा मंत्री उदय प्रताप सिंह भी इस बात को कई बार स्वीकार कर चुके हैं कि प्रदेश में कुछ जिलों में शिक्षक स्कूल नहीं जाते हैं।

उनके स्थान पर दूसरे लोग पढ़ाने जाते हैं। वहीं कुछ शिक्षक स्कूलों के निर्धारित समय पर नहीं पहुंचते हैं। ऑनलाइन उपस्थिति एम शिक्षा मित्र एप के जरिए शुरू की गई थी।

भाजपा नेता पर छेड़छाड़ का आरोप, पार्टी से निष्कासित

युवती ने खुद को कमरे में बंद किया; भाजपा नेत्री बोली- कार्यालय में डर लगता है

प्रति,
श्री देव कुमार सिंह जी
जिला अध्यक्ष भाजपा
जिला सीधी (म.प्र.)

निष्कासन

सीधी जिले के भाजपा जिला उपाध्यक्ष श्री सुरेश सिंह द्वारा अशोभनीय कृत्य किया गया है, उससे पार्टी की छवि धूमिल हुई है। यह कृत्य असहनीय है।

अतः भाजपा **प्रदेश अध्यक्ष मा. विष्णुदत्त शर्मा जी** द्वारा श्री सुरेश सिंह को **पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से तत्काल प्रभाव से निष्कासित** किया जाता है।

(भगवानदास सबनानी)

प्रतिलिपि-
मान. श्री शिवप्रकाश जी,राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री भाजपा
मान. श्री विष्णु दत्त शर्मा जी, प्रदेश अध्यक्ष व सांसद भाजपा म.प्र.

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी भाजपा जिलाध्यक्ष सुरेश सिंह पर एक युवती ने छेड़छाड़ का आरोप लगाया है। मामला तब सामने आया जब भाजपा नेत्री ने सोशल मीडिया पर लिखा। उन्होंने कहा कि अब तो कार्यालय जाने में डर लगता है। घटना शुक्रवार की है। हालांकि थाने में इसकी शिकायत नहीं की गई है। रविवार को पार्टी ने सुरेश सिंह को निष्कासित कर दिया है। बताया जाता है कि भाजपा कार्यालय से लगा एक ऑफिस है। शुक्रवार को पार्टी ऑफिस में मीटिंग रखी गई थी। बैठक के बाद भाजपा जिला उपाध्यक्ष सुरेश सिंह इसी ऑफिस में पहुंचे। यहां मौजूद 21 साल की युवती से छेड़छाड़ की कोशिश की।

घबराकर युवती ने खुद को कम्प्यूटर कक्ष में बंद कर लिया। जब ऑफिस के लोग आए, तब घटना का पता चला। युवती रोते हुए इसी दिन सीधी सांसद रीति पाठक के पास पहुंची। सांसद ने उसे कार्रवाई का आश्वासन देते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष देवकुमार सिंह के पास भेज दिया।

भाजपा नेत्री ने लिखा-जो हो रहा है, वह शर्मनाक: घटना के बाद शनिवार को भाजपा नेत्री नीलम पांडेय ने सोशल मीडिया पर लिखा- 'आजकल जो हो रहा है, वह शर्मनाक है। उससे भी शर्मनाक है जिम्मेदारों की चुप्पी। अब तो अति हो रही है। कार्यालय जाने में भय लगता है।' इस पर भाजपा नेता बद्री मिश्रा ने भी कमेंट किया है।

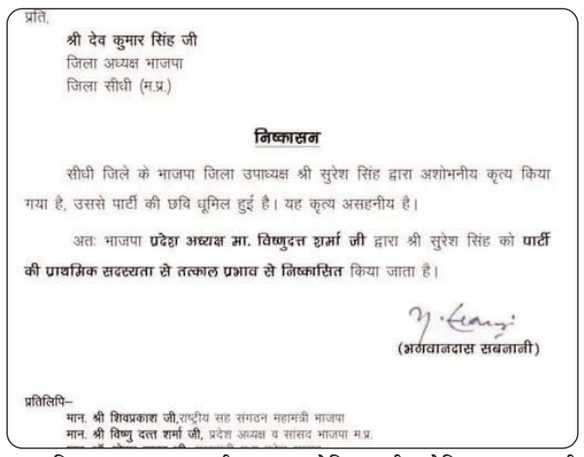

इसी मैसेज के बाद रविवार को भाजपा जिलाध्यक्ष देव कुमार सिंह ने लेटर जारी किया। इसमें लिखा, ' सीधी के भाजपा जिला उपाध्यक्ष सुरेश सिंह द्वारा अशोभनीय कृत्य किया गया है, जिससे पार्टी की छवि धूमिल हुई है। इस कारण भाजपा प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा की ओर से सुरेश सिंह को तत्काल प्रभाव से पार्टी की सदस्यता से निष्कासित किया जाता है।'

कांग्रेस बोली- महिलाएं सुरक्षित नहीं: कांग्रेस के पूर्व विधायक केदारनाथ शुक्ला ने कहा कि अब ऑफिस में भी महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं। गांधारी द्वारा धृतराष्ट्र को दी गई शिकायत की तरह ये मामला भी सामने आ गया है। वहीं, भाजपा जिलाध्यक्ष देवकुमार सिंह ने कहा कि अगर मामला सही पाया गया, तो दोषी को बख्शा नहीं जाएगा। पार्टी की नीति स्पष्ट है। गलत करने वालों पर तुरंत कार्रवाई की जाती है।

थाने में कोई शिकायत नहीं मिली: कोतवाली थाना प्रभारी पुष्पेंद्र मिश्रा ने बताया कि अभी तक औपचारिक शिकायत नहीं मिली है। शिकायत मिलते ही कार्रवाई की जाएगी। दैनिक भास्कर ने सांसद रीति पाठक से भी बात करने की कोशिश की, लेकिन उनका भी मोबाइल स्विच ऑफ बताता रहा।

शिवसेना ने कहा- केस दर्ज किया जाए: शिवसेना की जिला इकाई ने कोतवाली थाना प्रभारी को ज्ञापन सौंपा है। शिवसेना के प्रदेश उपाध्यक्ष विवेक पांडे ने कहा कि यह महिला की गरिमा का हनन है। उन्होंने आरोपी सुरेश सिंह चौहान के खिलाफ केस दर्ज कर मामले की निष्पक्ष जांच करने की मांग की।

व्यख्याननामा एवं जल गंगा संवर्धन अभियान का आयोजन

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के द्वारा आयोजित डॉ. भीमराव अंबेडकर जी के जयंती पखवाड़े में विकासखण्ड स्तरीय व्यख्याननामा एवं जल गंगा संवर्धन अभियान कार्यक्रम जनपद पंचायत मझगवाँ के सभागार में बतौर मुख्यातिथि शामिल हुए जिला पंचायत संजय सिंह कछवाह एवं मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के श्री राजेश तिवारी ब्लॉक कोऑर्डिनेटर, संजू शर्मा और क्षेत्र के आए हुए नवांकुर जन अभियान परिषद के सदस्य गण मंडल के महामंत्री निखिल गौतम उपाध्यक्ष वीरेंद्र गुप्ता आस्था कान्वेंट स्कूल के संचालक मनोज पांडे जी, कृष्णा तिवारी समेत कई लोग सम्मलित रहे इसके बाद जन अभियान परिसद के साथ मझगवाँ के प्राचीन तालाब में स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित कर साफ सफाई की गई, साथ ही "जल है तो कल है" का संदेश दिया गया।

जल संवर्धन अभियान अंतर्गत रामपुर बघेलान में नि :शुल्क प्याउ का शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। जल संवर्धन अभियान अंतर्गत नगर परिषद रामपुर बघेलान के विभिन्न वार्ड सब्जी मंडी, मेन मार्केट, बस स्टैंड, हनुमानगंज चौराहा में निःशुल्क प्याउ का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर पूर्व उपाध्यक्ष कमलेश कचेर, पार्षद शिवांक त्रिपाठी, अब्दुल इसहाक खां, सुखलाल बंसल, सीएमओ श्रीमती निधि राजपूत, इंजी. विश्वजीत कुशवाहा, संविदाकार जितेंद्र सिंह जित्तू, संजय सेन सहित नगर परिषद के कर्मचारी अधिकारी गण मौजूद रहे।

जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत कृषक संगोष्ठी का आयोजन

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)।जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत सतना जिले के जनपद पंचायत नागौद अंतर्गत ग्राम पंचायत हडहा की ग्राम पंचायतों में कृषक संगोष्ठी (पानी चौपाल) का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में कृषकों को विभागीय योजनाओं की जानकारी दी गई। साथ ही कृषकों से अपने आसपास के लोगों को भी इस अभियान में जोडने और जागरूक करने का आग्रह किया गया। इस अवसर पर स्थानीय जनप्रतिनिधिगण व ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

सडक सुरक्षा समिति की बैठक 23 को

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)।सांसद श्री गणेश सिंह की अध्यक्षता में 23 अप्रैल को सतना एवं मैहर की जिला सडक सुरक्षा समिति की बैठक आयोजित की जायेगी। जिसमें सतना जिले की जिला स्तरीय सडक सुरक्षा की बैठक 23 अप्रैल को कलेक्टर सभागार सतना में प्रातः 11.30 बजे तथा मैहर जिले की बैठक कलेक्टर सभागार मैहर में सायं 4 बजे से आयोजित की जायेगी। जिला सडक सुरक्षा समिति के सभी सदस्यों से बैठक में सम्मिलित होने का आग्रह किया गया है।

जल गंगा संवर्धन अभियान के चलाया गया सफाई अभियान

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत नगर परिषद जैतवारा के अंतर्गत वार्ड 4, 5 में पाइप लाइन लीकेज सुधार कार्य एवं सिमराबल नदी के किनारे सफाई कार्य व झाड़ियों की कटाई कार्य किया गया। इस अवसर पर नगर परिषद जैतवारा की अध्यक्ष श्रीमती रेनू डोहर, सीएमओ श्रीमती निधि राजपूत, इंजीनियर आनंद त्रिपाठी सहित नगर परिषद के कर्मचारी मौजूद रहे।

पेयजल की समीक्षा बैठक 22 अप्रैल को

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)।कार्यपालन यंत्री लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी ने बताया कि पेयजल के संकट को देखते हुए विभागीय समीक्षा बैठक 22 अप्रैल को प्रातः 11.30 बजे जिला पंचायत के द्वितीय तल पर आयोजित की जायेगी। आयुक्त नगर निगम, कार्यपालन यंत्री लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग, महाप्रबंधक जल निगम, मुख्य कार्यपालन अधिकारी नगर परिषद चित्रकूट एवं नगर पंचायत सहित विकासखण्ड स्तर के अधिकारियों के साथ बैठक में उपस्थित रहेंगे।

कार्यालयों में ई-आफिस से चलेंगी फाइलें, पेपरलेस होगी कार्यप्रणाली, डाक व्यवस्था होगी समाप्त

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शासकीय कार्यों में पारदर्शिता लाने के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जनवरी 2025 में मुख्यमंत्री आवास से ई-आफिस कार्यप्रणाली का शुभारम्भ किया था। जिसके बाद संभाग और जिले स्तर पर ई-ऑफिस को लागू करने का कार्य शुरू हो चुका है। जिसके तहत रीवा संभागीय कार्यालय एवं कलेक्टर कार्यालय इस कार्यप्रणाली में पूरी तरह से ऑन-बोर्ड हो चुके हैं। साथ ही रीवा जिले के 35 विभाग भी ई-ऑफिस में ऑन-बोर्ड हो चुके हैं, जिसमें से 20 कार्यालय/सेक्शन ई-आफिस से फाइलें भेजने का कार्य प्रारंभ कर दिया है। इसमें से कलेक्ट्रेट की भू-अभिलेख शाखा ने सर्वाधिक 9 फाइलों का ई-ऑफ़िस से निपटारा किया गया। जिले के अन्य विभाग भी अब पूरी तरह से फाइलें ई-ऑफ़िस से ही प्रेषित कर रहे हैं । कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने कहा कि ई-ऑफिस एक डिजिटल क्रांति के रूप में हैं। इससे हम सिंगल क्लिक से अनुमोदित कर फाइल सम्बंधित कार्यालय को वापस कर सकते हैं। जिले में पूरी तरह ई-ऑफिस में शिफ्ट होने के बाद हम अनुभाग, जनपद और तहसील स्तर तक लागू करने की दिशा में आगे बढ़ेंगे। संयुक्त कलेक्टर प्रमोद कुमार पाण्डेय ने कहा कि मैंने अपनी सभी शाखाओं से फाइले ई -ऑफिस से ही लेना शुरू कर दिया हैं द्य ई-ऑफिस से ही नोटशीट बनाना, ड्राफ्ट को अप्रूवल करना, ई साइन करके फाइल आगे बढ़ा देना काफी आसान हैं। जिला नोडल अधिकारी ई आफिस मनीष पटेल ने बताया कि रीवा संभागीय कार्यालय, कार्यालय कलेक्टर एवं जिले के लगभग 35 कार्यालय ई-ऑफिस में ऑन-बोर्ड हो चुके हैं। सभी विभागों को रोस्टर जारी कर प्रशिक्षण भी दिया जा चुका हैं। अप्रैल माह तक सभी कार्यालयों को ई-ऑफिस में ऑन-बोर्ड कर दिया जायेगा। इसी क्रम में कलेक्ट्रेट में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अधिकारियों-कर्मचारियों को नोडल अधिकारी प्रशिक्षण दिया गया।

ई-आफिस के लाभ- ई-आफिस से अधिकारी/कर्मचारी अपनी शासकीय ईमेल-आईडी से अन्य अधिकारी को फाइलें भेज सकेंगे और वरिष्ठ अधिकारी से अनुमोदन भी ऑनलाइन ही प्राप्त किया जा सकेगा। ई-आफिस सिस्टम से समय और पेपर दोनों की बचत होगी। इस सिस्टम से शासकीय कार्यप्रणाली में गति एवं पारदर्शिता आयेगी, फाइल की हेराफेरी एवं काट-छांट की गुंजाइश समाप्त होगी। फाइल के बनने से लेकर व किस स्थिति में है ई-ऑफिस से ऑनलाइन देखा जा सकेगा साथ ही संबंधित अधिकारी-कर्मचारी को काम तय समयसीमा में करना होगा।

युवा संगम कार्यक्रम आज आईटीआई रीवा में

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले के शासकीय आईटीआई रीवा में 21 अप्रैल को सुबह 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक युवा संगम कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा। युवा संगम कार्यक्रम के तहत आयोजित रोजगार मेले में जिले के बेरोजगार युवक-युवतियों को विभिन्न कंपनियों में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाएंगे। इस संबंध में उप संचालक रोजगार अनिल दुबे ने बताया कि रोजगार मेले में 10 कंपनियों एवं नियोजकों द्वारा युवाओं का चयन किया जाएगा। मेले में शामिल होने के लिए विभिन्न कंपनियों में युवक एवं युवतियों की आयु सीमा 18 से 50 वर्ष के बीच होनी चाहिए। वेतन एवं भत्ते 8500 रुपए से 25 हजार रुपए तक निर्धारित किया गया है। वेतन एवं भत्ता विभिन्न कंपनियों में अलग-अलग देय होगा। युवाओ को अपने साथ मूल अंकसूची तथा निवास प्रमाण पत्र की छायाप्रति, आधार कार्ड या वोटर आईडी, रोजगार कार्यालय का जीवित पंजीयन एवं नवीनतम दो पासपोर्ट साइज के फोटो लेकर आना अनिवार्य होगा।

उप संचालक ने बताया कि रोजगार मेले में जीएसएस आईएफएमएस प्रा. लि. जामनगर ए गुजरात, बैक्सी लिमिटेड नीमराना कोटा, टाटा मोटर ऑटो मोबाइल कंपनी गुजरात, ख्याति शील्ड वेन्टुरेज प्रा. लि. छत्तीसगढ, पेरेग्रीन गार्डिंग प्रा.लि. गुजरात, प्रतिभा सिन्टेक्स लि. पीथमपुर, प्रगतिशील एग्रोटेक प्रा. लि. रीवा, प्रगतिशील बायोटेक प्रा. लि. रीवा, डीएमसी फिनिसिंग स्कूल प्रा. लि. पुणे तथा एचडीएफसी लाइफ इश्योरेन्स कंपनी लिमि. रीवा में रोजगार के अवसर उपलब्ध रहेंगे।

कलेक्ट्रेट में टीएल बैठक आज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।. कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल की अध्यक्षता में 21 अप्रैल को टीएल बैठक का आयोजन किया गया है। कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में प्रातः 11 बजे से आयोजित बैठक में सभी जिला प्रमुखों, एसडीएम, सीईओ जनपद तथा तहसीलदारों की उपस्थिति के निर्देश दिये गये हैं। बैठक में सभी तहसीलदार अमृत सरोवरों व बलराम तालाबों की प्रविष्टि पूर्ण कर खसरों की भौतिक प्रति के साथ उपस्थित रहेंगे।

शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम की ग्यारहवीं प्रस्तुति 1 मई को

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मैहर मां शारदा की पावन नगरी एवं संगीत संम्राट पद्म विभूषण बाबा अलाउद्दीन खाँ साहब की साधना स्थली मैहर में शास्त्रीय संगीत के उभरते हुये नवोदित कलाकारों को मंच देने का कार्य जिला प्रशासन के सहयोग से मैहर म्यूजिक अटाला आर्ट सिटी के तत्वाधान में 1 जुलाई 2024 दिन सोमवार से प्रारंभ किया गया था। जिसकी ग्यारहवीं प्रस्तुति 1 मई 2025 दिन गुरुवार को शासकीय संगीत महाविद्यालय परिसर में सायं काल 7 बजे से रात्रि 9 बजे तक संपन्न होगी। शास्त्रीय संगीत के इस कार्यर म में शास्त्रीय गायन, वादन एवं नृत्य के कलाकार अपनी प्रस्तुती दे सकेंगे। साथ में अटाला आर्ट के तहत घर की अनुपयोगी वस्तुओं से निर्मित कलाकृति की प्रदर्शनी भी शासकीय संगीत कॉलेज परिसर में लगाई जाएगी। जिले की अन्य विद्यालय भी इस र म को आगे बढ़ाने में सहयोग प्रदान करें। कलाकार अपने आवेदन बायोडाटा के साथ दिनांक 25 अप्रैल 2025 तक संगीत महाविद्यालय मैहर में प्रभारी श्री अनिल कुमार जायसवाल, सहायक व्याख्याता मोबा. 7987274350 के पास जमा कर सकते हैं। जिन कलाकारों की प्रस्तुतियां हो चुकी हैं वह 1 वर्ष के पश्चात ही आवेदन करने के पात्र होंगे। मैहर घराने को जीवंत बनाने एवं विद्या की देवी माँ शारदा की नगरी को संगीत मय बनाने हेतु शास्त्रीय संगीत कार्यर म का आयोजन प्रत्येक माह की 1 तारीख को किया जा रहा है। शास्त्रीय संगीत के इस नियमित मासिक कार्यक्रम के अवसर पर नवोदित कलाकारों के उत्साह वर्धन हेतु कला प्रेमी रसिक जन मित्रों के साथ आमंत्रित है।

जनकल्याण और सुशासन में दें योगदान : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मुख्यमंत्री ने मैदानी अधिकारियों को दिए निर्देश

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि जनकल्याण के लिए अधिकारी मैदान में उतरें। नागरिकों को आवश्यक सेवाएं प्रदान कर, सुशासन की दिशा में अपना प्रभावी योगदान दें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शानिवार रात मुख्यमंत्री निवास से वीडियो कान्फ्रेंस द्वारा प्रदेश के कलेक्टर्स-कमिश्नर्स, एसपी, आईजी से विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा कर निर्देश दिए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अधिकारी जिलों में उपार्जन केंद्रों का निरीक्षण कर व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें। किसानों को जरूरी सुविधाएं उपलब्ध करवाएं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अधिकारी कानून व्यवस्था की स्थिति पर नजर रखें। पुलिस व्यवस्था चाक-चौबंद रहे। आमजन से अधिकारी-कर्मचारी का व्यवहार विनम्र और अच्छा हो। कार्यालयों में आने वाले नागरिक को समाधान प्राप्त हो। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि खेतों में पराली जलाने पर रोक लगाने के लिए जागरूकता बढ़ाई जाए। किसानों को सुपर सीडर और हैप्पी सीडर जैसे उपकरण अधिक संख्या में उपलब्ध करवाए जाएं। इससे किसानों को पराली जलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी और उनका समय भी बचेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नागरिकों को ग्रीष्मकाल में स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने के लिए आवश्यक प्रचार-प्रसार किया जाए। आवश्यक दवाएं उपलब्ध रहें। बाजार में संर मित फ्ल न बिकें, उस पर नजर रखी जाए। सार्वजनिक प्याऊ की व्यवस्था के लिए स्वयंसेवी संस्थाओं का सहयोग लिया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जिलों और संभागों में सभी अधिकारी पारदर्शिता, नवाचार, परिश्रम से कार्य करते हुए नागरिकों को लाभान्वित करने के लिए सरि य रहें। वीसी में मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन सहित वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

प्रिज्म जॉनसन लिमिटेड द्वारा प्रिज्म चैंपियन सितारे कार्यक्रम संपन्न

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। प्रिज्म जॉनसन लिमिटेड द्वारा छतरपुर कार्यालय में चैंपियन सितारे मीट का सफल आयोजन किया गया। आयोजित कार्यक्रम में छतरपुर ब्रांच के अंतर्गत आने वाली विभिन्न तहसीलों से चयनित विशिष्ट ठेकेदार बंधुओं को आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम का नेतृत्व ब्रांच के तकनीकी प्रबंधक इंजीनियर लोकेश गुप्ता ने किया, जिन्होंने प्रिज्म चैंपियन सितारे जैसी नवीन एवं अनूठी पहल की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस योजना से जुड़ी सुविधाओं और ठेकेदारों को मिलने वाले लाभों की विस्तृत जानकारी दी। आयोजित कार्यक्रम में सभी चैंपियन सितारे ठेकेदारों को फूल-माला, मेडल, विजिटिंग कार्ड एवं पहचान पत्र वितरित किये गये। कार्यक्रम में उपस्थित ठेकेदारों ने प्रिज्म सीमेंट के साथ अपने अनुभव साझा किये और विशेष रूप से आल वेदर सीमेंट, के बारे में जानकारी दी गई ।

सपने सितारे योजना, दुर्घटना बीमा, छात्रवृत्ति योजना जैसी पहलों की सराहना की साथ ही तकनीकी अभियंताओं कि सेवाओं की खुले दिल से प्रशंसा की गई। कार्यक्रम के समापन पर सभी प्रतिभागियों को स्मृति उपहार भेंट किये गये एवं दोपहर को सुरूचि भोज की व्यवस्था की गई।

आयोजित कार्यक्रम में सौरभ श्रीवास्तव ब्रांच मैनेजर, इंद्रपाल नायक सेल्स प्रमोटर के अलावा तकनीकी और सेल्स टीम की सक्रिय सहभागिता रही। आयोजन को सफल बनाने में प्रिज्म सीमेंट छतरपुर ब्रांच की तकनीकी एवं सेल्स टीम का योगदान सराहनीय रहा।

उपरोक्त आशय की जानकारी प्रिज्म जॉनसन लिमिटेड के एजीएम सीएसआर एण्ड जनसंपर्क देवेन्द्र मिश्रा ने दी।

सरनेम परिवर्तन सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि, मैं पूनम शुक्ला पत्नी श्री ऋषि शुक्ला निवासी हाउस नं. 30, गांधी वार्ड नं. 4, गोविंदगढ़, जिला रीवा (म.प्र.), आधार नं. 276257424596 हूं। विवाह से पूर्व मेरा सरनेम पूनम द्विवेदी था। श्री ऋषि शुक्ला से विवाह के पश्चात मैंने अपना सरनेम शुक्ला धारण कर लिया है। जिसका शपथ पत्र मेरे द्वारा दिया जा चुका है। अतः मुझे अब पूनम शुक्ला के नाम से जाना जाए एवं मेरी सभी दस्तावेजों में मेरा नाम पूनम शुक्ला लिखा और पढ़ा जाए।

सूचनादाता
पूनम शुक्ला

विचार

आखिर ब्राह्मणों ने बिगाड़ा क्या है?

रोज सुबह-शाम ईश्वर की आराधना करते समय सबके कल्याण और विश्व में शांति के लिए प्रार्थना करने वाले ब्राह्मणों ने किसी का क्या बिगाड़ा है? यह सवाल हम इसलिए कर रहे हैं क्योंकि कभी दिल्ली के जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय की दीवारों पर ब्राह्मण भारत छोड़ो का नारा लिख कर वामपंथी सामाजिक तनाव फैलाने का प्रयास करते हैं तो कभी खबर आती है कि कर्नाटक में एक परीक्षा केंद्र में छात्रों से परीक्षा कक्ष में प्रवेश करने से पहले उन्हें जनेऊ उतारने के लिए कहा जाता है। कभी खबर देखने को मिलती है कि एक फिल्म निर्माता निर्देशक ब्राह्मणों पर पेशाब करने की बात खुलेआम कह देता है। देखा जाये तो हमारे देश की जाति व्यवस्था में ब्राह्मण को गुरु, पूज्य और यहाँ तक कि तीर्थस्वरूप माना गया है। कोई भी शुभ कार्य करना हो तो ब्राह्मण ही उसे संपन्न कराता है। पौराणिक ग्रंथों में तो उल्लेख मिलता है कि ब्राह्मण को कभी निराश नहीं करना चाहिए और ब्राह्मणों को दिये जाने वाला दान-दक्षिणा जन्म जन्मांतरों तक मनुष्य को अक्षय फल प्रदान करता है। लेकिन आज ब्राह्मणों के अपमान का फैशन-सा चल पड़ा है। चूंकि ब्राह्मण अपने हक के लिए या अपने खिलाफ हो रहे अत्याचार के विरोध में सड़कों पर नहीं उतरते इसलिए सरकारों का ध्यान भी उनकी ओर नहीं जाता। देखा जाये तो इतिहास गवाह है कि ब्राह्मणों ने कभी विद्रोह नहीं किया ना ही अपने हक के लिए कोई बड़ी लड़ाई लड़ी है। ब्राह्मण का प्रयास रहता है कि समाज में शांति और समृद्धि बनी रही। ब्राह्मणों के खिलाफ अक्सर अफवाहें और दुष्प्रचार अभियान भी चलाये जाते हैं लेकिन वह खामोशी से यह सोचते हुए सब कुछ देखते रहते हैं कि एक दिन प्रभु कृपा से सच सामने आ ही जायेगा। जहां तक कर्नाटक के शिवमोगा में सीईटी परीक्षा केंद्र आदिचुंचनगिरि पीयू कॉलेज में छात्रों से परीक्षा कक्ष में प्रवेश करने से पहले उन्हें जनेऊ उतारने के लिए कहने की बात है तो इसको देखकर हर कोई स्तब्ध है। कर्नाटक ब्राह्मण सभा के सदस्य नटराज भागवत की शिकायत के बाद मामला दर्ज कर लिया गया है। देखना होगा कि इस मामले में कोई बड़ी कार्रवाई होती है या नहीं लेकिन जिसने भी जनेऊ उतारने के लिए कहा या कहलवाया उसे पता होना चाहिए कि यज्ञोपवीत यानि जनेऊ ब्राह्मण को प्रदत्त महान शक्ति है। यह शक्ति अत्यन्त शुद्ध चरित्रता और कठिन कर्तव्य परायणता प्रदान करने वाली है। यज्ञोपवीत न तो मोतियों का है और न स्वर्ण का, फिर भी यह ब्राह्मणों का आभूषण है। इसके द्वारा देवता और ऋषियों का ऋण चुकाया जाता है। जिन्होंने छात्रों को जनेऊ उतारने के लिए कहा उन्हें पता होना चाहिए कि यज्ञोपवीत से सत्य व्यवहार की आकांक्षा, अग्नि के समान तेजस्विता और दिव्य गुणों की पवित्रता प्राप्त होती है।

मुर्शिदाबाद हिंसा कांड पर कुछ अनुत्तरित सवाल

पश्चिम बंगाल के हिंसाग्रस्त मुर्शिदाबाद के धुलियान कस्बे में वैसे तो वफ कानून का विरोध 08 अप्रैल से चल रहा था, लेकिन शुक्रवार 11 अप्रैल को जुमे की नमाज के बाद इलाके में माहौल अचानक तब बिगड़ गया, जब लगभग 150 लोगों ने मोहल्ले के निहत्थे और मासूम निवासियों जोरदार हमला कर दिया। जब 51 साल की बेबस और लाचार महिला जानकी मंडल ने फूट-फूट कर रोते हुए अपनी आंखों के सामने घटी घटना का टीवी पर वर्णन किया तो सचमुच बहुत दुःख हुआ। वह बता रही थीं कि बेकाबू भीड़ ने हिंदुओं के घरों और दुकानों में आग लगा दी।

पुरुषों को मारा-पीटा और सबकी आंखों के सामने ही उनकी बेटी-बहुओं और माताओं का मान लूटने की कोशिश की। उग्र भीड़ में शामिल आततायियों ने मोहल्ले वालों को धमकी दी कि भाग जाओ, वरना मारे जाओगे और लाचार मोहल्ले वाले चुपचाप यह सब देखते-सुनते रहे। फिलहाल, अपने ही देश में मालदा के वैष्णव नगर स्थित एक स्कूल में शरणार्थी बनकर रह रहीं जानकी मंडल ने यह भी बताया कि कैसे वह अपनी इज्जत और जान बचाकर बच्चों के साथ वहां से भागी थीं। बता दें कि यह पीड़ा केवल जानकी मंडल की नहीं, बल्कि वैष्णव नगर के स्कूल में शरणार्थी बनकर रह रहे लगभग 04 दर्जन हिंदू परिवारों की भी है, लेकिन ऐसा सोचना मूर्खता होगी कि मुर्शिदाबाद हिंसा कांड के सबसे अधिक पीड़ित और दुखी धुलियान कस्बे के लोग ही हैं।

और ऐसा सोचने की भूल तो कदापि नहीं करनी चाहिए कि इस भयावह पीड़ा और संत्रास वाली निमर्म घटनाओं की चैहद्दी धुलियान कस्बे तक ही सीमित है, बल्कि सच तो यह है कि मुर्शिदाबाद के विभिन्न इलाकों से आने वाली इस पीड़ा और संत्रास की आर्त चीखें दूर-दूर तक किसी भी संवेदनशील व्यक्ति के लिए हृदय विदारक रही हैं। जाहिर है कि दुःख-दर्द, निराशा, हताशा, बेबसी, लाचारी और आक्रोश से भरी बिल्कुल धुलियान के लोगों जैसी ही कहानियां कई अन्य इलाकों की भी है। टीवी चैनलों की भीड़ में एक चैनल पर शमशेरगंज इलाके के प्रसेनजीत दास ने भी रोते-कलपते हुए अपनी आपबीती तथा आंखो देखी घटनाएं टीवी पर बताई। गौरतलब है कि मुर्शिदाबाद हिंसा के मृतकों में से दो लोग प्रसेनजीत दास के परिवार से ही थे। मृतकों में एक उनका चचेरा भाई हरगोविंद दास और दूसरा भतीजा चंदन था। प्रसेनजीत ने जैसा टीवी पर बताया उसके अनुसार 10 अप्रैल की रात में लगभग 400 लोगों की भीड़ तलवार और छुरियां लहराते हुए मोहल्ले में घुसी। भीड़ में शामिल आततायियों ने 25 से 30 घरों, होटलों, दुकानों आदि में तोड़-फोड़ की और उन्हें आग के हवाले कर दिया। आंखों में भय भरकर प्रसेनजीत ने बताया कि भीड़ बहुत उग्र थी, इसलिए हमलोग उनसे भीड़ने की हिम्मत नहीं जुटा पाए और जो कुछ वे करते रहे हमलोग चुपचाप देखते रहे।

उक्त घटना के संबंध में एक अन्य बेहद खौफजदां व्यक्ति ने बताया कि भीड़ की उग्रता और आतंक इतना था कि कोई कुछ भी करने में असमर्थ महसूस कर रहा था। इसलिए सभी अपनी-अपनी जान बचाकर भागने में ही लगे रहे। जाहिर है कि ये सभी आपबीती तथा आंखो देखी पीड़ा-व्यथाएं बिल्कुल सच्ची हैं। इनके अलावा, एक और सच, जिसे अब पूरी दुनिया जान और समझ चुकी है, वह यह कि इतनी बड़ी घटना घट जाने के बाद भी बंगाल सरकार की मुखिया ममता बनर्जी की 'ममता' अब तक नहीं जाग पाई है। जरा सोचिए, कि बंगाल के मुर्शिदाबाद के सुती, धुलियान, शमशेरगंज और जंगीपुर इलाकों में हुई हिंसा में कम-से-कम 03 लोगों की जान चली गई, 15 पुलिसकर्मी घायल हुए और सैकड़ों लोग बेघर हो गए। हालांकि, इस मामले में अब तक 300 से भी ज्यादा लोग गिरफ्तार किए गए हैं। वहीं, कोलकाता हाईकोर्ट के आदेश के बाद हिंसाग्रस्त इलाकों में केंद्रीय सुरक्षा बलों के 1600 जवान भी तैनात किए जा चुके हैं। हिंसा प्रभावित शमशेरगंज के एक निवासी हबीबउर रहमान ने न्यूज एजेंसी एएनआई को बताया कि बीएसएफ और सीआरपीएफ की तैनाती के बाद इलाके में माहौल शांत है। वैसे, खबरें यह भी आ रही हैं कि प्रशासन ने लोगों से दुकानें खोलने और अनुशासन बनाए रखने की बात कही है। वहीं, पीड़ित हिंदू परिवारों ने बीएसएफ की स्थायी तैनाती की मांग की है। उनके भीतर उस उग्र भीड़ का ऐसा खौफ समाया है कि उन्हें लगता है कि यदि बीएसएफ हटी तो फिर से स्थितियां खराब हो सकती हैं।

लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा प्रतीत होता है कि ममता बनर्जी मृतकों और घायलों से मिलने उनके आंसू पोंछने के बजाए लगभग एक वर्ष के बाद होने वाले बंगाल चुनाव की गोटियां बिछाने में लगी हैं। जाहिर है कि यदि ऐसा नहीं होता तो वह कोलकाता के नेताजी इंडोर स्टेडियम पहुंचकर इमामों से मिलने के बजाए मुर्शिदाबाद हिंसा कांड के पीड़ित-प्रताड़ित, खौफजदां, बेबस और लाचार भुक्तभोगी परिवारों से मिलने, उनको मदद पहुंचाने और उनका दुःख-दर्द बांटने जातीं। यदि यह भी मान लें कि उनकी कोई राजनीतिक मजबूरी रही होगी, तो कम-से-कम पीड़ितों को सांत्वना देने और ढाढ़स बंधाने के लिए वह अपना एक प्रतिनिधि ही भेज देतीं, लेकिन अब तक उन्होंने ऐसा भी नहीं किया है। हां, मृतकों के परिवारों को 10-10 लाख रुपए मुआवजा देने की घोषणा उन्होंने अवश्य की है। बहरहाल, उक्त घटना के गर्भ से कुछ बेहद गंभीर सवाल उठे हैं, जो सरकारों और सुरक्षा एजेंसियों को कठघरे में खड़े करने की ताकत रखते हैं। जरा सोचिए, कि कहां तो हम बांग्लादेश के हिंदुओं की चिंता करते नहीं अघाते थे, लेकिन हम तो अपने ही घर बंगाल के हिंदुओं की रक्षा कर पाने में असमर्थ साबित होने लगे हैं। और तो और, अब जांच एजेंसियां बता रही हैं कि मुर्शिदाबाद हिंसा की योजना तुर्की में बनाया गया था, जिसे बांग्लादेश के रास्ते बंगाल तक पहुंचाया गया। यह भी, कि इसके लिए बाकायदा 02 महीने पहले ही ट्रेनिंग दी गई थी, जिसमें पुलिस से बचकर दंगा भड़काने और स्थानीय मदरसों से मदद लेने की भी बातें शामिल हैं। इस पर दो बेहद गंभीर सवाल बनते हैं। पहला, यह कि हम हिंदुओं को प्रताड़ित करने के लिए किस मुह से यूनुस को दोष दें। उनसे कैसे कहें कि बांग्लादेश में हिंदू असुरक्षित और पीड़ित हैं, जबकि सच तो यह है कि हिंदू बंगाल में भी सुरक्षित नहीं हैं। दूसरा सवाल, यह कि राज्य और केंद्र की हमारी सुरक्षा और खुफिया एजेंसियां क्या कर रही थीं कि तुर्की में बनी और बांग्लादेश के रास्ते मुर्शिदाबाद तक पहुंची योजना को हम विफल नहीं कर पाए। जब हिंसा के दौरान बांग्लादेश से भारत में 71-150 कॉल किए गए, तब हमने उन्हें इंटरसेप्ट क्यों नहीं किया। वास्तव में ये कुछ सवाल हैं, जिनके उत्तर मिलना अभी शेष हैं।

आरक्षण केवल एक संख्या नहीं

तेलंगाना ने अनुसूचित जातियों के वर्गीकरण को लेकर एक ऐतिहासिक कदम उठाते हुए न केवल राज्य की सामाजिक संरचना को झकझोर दिया है, बल्कि राष्ट्रीय राजनीति की दिशा भी बदलने का संकेत दे दिया है। यह कदम 1990 में वी.पी. सिंह की मंडल राजनीति के बाद आरक्षण नीति में सबसे बड़ा हस्तक्षेप माना जा रहा है, जिसने उस समय 27 प्रतिशत ओ.बी.सी. आरक्षण लागू कर सत्ता समीकरणों को नए सिरे से परिभाषित किया था। अब तेलंगाना की यह पहल 'मंडल 2.0 के रूप में जातीय राजनीति के एक नए युग की शुरूआत करती है।

तेलंगाना, जहां फिलहाल कांग्रेस की सरकार है, देश का पहला ऐसा राज्य बन गया है जिसने अनुसूचित जातियों को 4 उपवर्गों ए.बी.सी.और डी.में बांट दिया है। यह वर्गीकरण दशकों पुरानी उस मांग की पूर्ति है, जिसमें कहा जा रहा था कि आरक्षण का लाभ कुछ प्रमुख एस.सी. समुदायों, विशेषकर माला को अनुपातहीन ढंग से मिल रहा है, जबकि मदिगा जैसे समुदाय हाशिए पर पड़े हुए हैं। यह निर्णय मदिगा आरक्षण पोराटा समिति की वर्षों पुरानी लड़ाई की जीत है, जिसने एस.सी.वर्गों के भीतर सामाजिक न्याय की मांग उठाई थी। इस निर्णय से तेलंगाना सामाजिक न्याय की प्रयोगशाला बन गया है, जहां पारंपरिक आरक्षण नीति से आगे जाकर समुदायों के भीतर के अंतर को मान्यता दी जा रही है।

ग्रामीणों की खुशहाली के लिये मनरेगा का सशक्तिकरण हो

ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज पर संसद की स्थायी समिति ने महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कानून (मनरेगा) के तहत प्रदान किए जाने वाले काम के दिनों की संख्या 100 से बढ़ाकर 150 दिन करने समेत श्रमिकों के दैनिक पारिश्रमिक को कम से कम 400 रुपये निर्धारित करने की सिफारिश की है, इन सिफारिशों से न केवल यह योजना अधिक सशक्त एवं प्रभावी होकर ग्रामीण जनजीवन के कमजोर लोगों के लिये राहत का माध्यम बनेगी, बल्कि ग्रामीण जीवन को नये भारत की बुनियाद बनायेगी। मनरेगा भारत सरकार द्वारा ग्रामीण गरीब एवं कमजोर लोगों के लिए उठाया गया एक क्रांतिकारी कदम है और वर्तमान में यह भारत में सबसे बड़ा स्व-लक्ष्यीकरण कार्यक्रम है। यह सामाजिक सुरक्षा, आजीविका सुरक्षा और लोकतांत्रिक सशक्तिकरण के माध्यम से ग्रामीण भारत में समावेशी विकास सुनिश्चित करने के लिए एक प्रभावशाली साधन है। जो नये भारत, सशक्त भारत, विकसित भारत का आधार होगा।

मनरेगा में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए सामाजिक अंकेक्षण और शिकायत निवारण तंत्र की व्यवस्था है, बावजूद मनरेगा में भी भ्रष्टाचार, अफसरशाही, अनियमितता, कोताही के कारण इस महत योजना पर भी समय-समय अंधेरा छाता रहा है। यों तो गिरावट हर स्तर पर है। समस्याएं भी अनेक मुखरित हैं पर राष्ट्रीय चरित्र को विघटित करने वाले भ्रष्टाचार एवं अनियमितता की काली छाया मनरेगा पर न पड़े, इसलिये स्थायी समिति का यह सुझाव स्वागतयोग्य है कि श्रमिकों की संतुष्टि, वेतन में देरी, भागीदारी के रुझान और योजना में वित्तीय अनियमितताओं पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए। इसीलिये समिति ने मनरेगा से जुड़े कार्यक्रम की कमियों के बारे में अहम जानकारी प्राप्त करने और मनरेगा की प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए आवश्यक नीतिगत सुधारों को लागू करने के लिए देशभर में स्वतंत्र एवं पारदर्शी सर्वेक्षण की सिफारिश की है। समिति ने उभरती चुनौतियों के मद्देनजर योजना को नया रूप देने पर भी जोर दिया है। मनरेगा बदलते वक्त और उभरती चुनौतियों के बावजूद आज भी प्रासंगिक है।

मनरेगा ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा करता है, जिससे लोगों को आय प्राप्त होती है और उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होता है, यह योजना टिकाऊ संपत्तियां जैसे सड़क, नहर, तालाब, कुएं बनाने पर जोर देती है, जो ग्रामीण क्षेत्रों के समग्र विकास में योगदान करती हैं। भारत आज भी गांवों का देश है, विकास की गंगा गांवों से होकर ही निकलती है। मनरेगा ग्रामीण परिवारों की आजीविका सुरक्षा को बढ़ाता है, खासकर उन क्षेत्रों में जहां अन्य रोजगार के अवसर सीमित हैं, यह श्रम शक्ति के सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम है। यह योजना ग्रामीण महिलाओं को रोजगार प्रदान करती है, जिससे वे सशक्त हो पाती हैं और समाज में सक्रिय भूमिका निभा पाती हैं। यदि किसी

व्यक्ति को मनरेगा के तहत 15 दिनों के भीतर काम नहीं मिलता है, तो उन्हें बेरोजगारी भत्ता दिया जाता है, जो एक सुरक्षा जाल के रूप में कार्य करता है।

मनरेगा एक बहुआयामी योजना है, जिसके तहत विभिन्न उत्पादक परिसंपत्तियों का निर्माण किया जाता है, जैसे कि जल संरक्षण संरचनाएं, ग्रामीण सड़कें, और अन्य बुनियादी ढाँचे की परियोजनाएं, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देती हैं। मनरेगा के तहत रोजगार एक कानूनी अधिकार है, जिसका अर्थ है कि प्रत्येक पात्र व्यक्ति को रोजगार का दावा करने का अधिकार है। इस दूरगामी एवं ग्रामीण जनजीवन के उन्नयन एवं उत्थान के कार्यक्रम के लागू होने के बाद लाखों मजदूरों को काम मिला है। पलायन में काफी हद तक कमी आई। मनरेगा ने साबित किया कि भारत में आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के लिए वह आज भी उम्मीद की किरण है। इस कार्यक्रम से लाखों अकुशल श्रमिकों और महिलाओं को पूरे वर्ष में सौ दिन के रोजगार की गारंटी मिली। इससे बड़ी संख्या में ग्रामीण परिवार लाभान्वित हुए। यही वजह है कि इस कार्यक्रम में काम के दिन बढ़ाने की मांग अक्सर उठती रही है। अब संसद की स्थायी समिति ने भी मनरेगा पर भरोसा जताते हुए काम के दिनों की संख्या बढ़ा कर पांच महीने यानी डेढ़ सौ दिन करने और दैनिक पारिश्रमिक कम से कम चार सौ रुपए करने की सिफारिश की है, जो प्रासंगिक एवं बढ़ती महंगाई को देखते हुए जरूरी है। दरअसल, अभी इस कार्यक्रम के तहत मिलने वाली मजदूरी न्यूनतम जरूरतें एवं बुनियादी दैनिक खर्चों को पूरा करने के लिए भी अपर्याप्त हैं। मजदूरी वर्तमान आर्थिक वास्तविकताओं के अनुरूप हों और ग्रामीण श्रमिकों को सम्मानजनक पारिश्रमिक प्रदान करें। रोजगार योजना के लिए आबंटित राशि में लंबे समय से ठहराव पर समिति की चिंता इसी संदर्भ में है। कोई दो राय नहीं कि इसकी राशि बढ़ने से इसकी प्रभावशीलता बढ़ेगी। समिति ने कहा, बदलते समय और उभरती चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए योजना में सुधार की आवश्यकता है। समिति मंत्रालय से उन विकल्पों पर विचार करने का आग्रह करती है, जिससे मनरेगा अधिक सशक्त, पारदर्शी एवं प्रभावी बन सके। यह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के ग्रामीण विकास योजना को बल देने में सहायक है। हालांकि मनरेगा निरन्तर सवालों से घिरी रही है, इसमें वित्तीय अनियमितता की भी शिकायतें मिलती रही हैं। इसके प्रति श्रमिकों का रुझान घटने और मजदूरी देर से मिलने पर सवाल उठते रहे हैं। ग्रामीण विकास और पंचायती राज मंत्रालय की स्थायी समिति ने तीन साल पहले मनरेगा का विश्लेषण करते हुए कई सुझाव दिए थे। तब उस समिति ने भी इस कार्यक्रम को नया रूप देने के लिए काम के गारंटीशुदा दिनों को सौ से बढ़ा कर डेढ़ सौ करने की सिफारिश की थी और सभी राज्यों में समान मजदूरी दर करने का सुझाव दिया था। अब संसद की समिति ने उन सुझावों पर एक तरह से मुहर लगाई है। अगर मनरेगा में नीतिगत सुधारों को लागू करने के लिए स्वतंत्र और पारदर्शी सर्वेक्षण होगा, तो इसके बेहतर परिणाम सामने आएंगे। मनरेगा ने अपनी तार्किक सार्थकता साबित की है, लेकिन अभी इसमें व्यापक सुधारों की अपेक्षा है। देखने में आ रहा है मनरेगा से लाभान्वित लोगों को अक्सर बिना काम के ही राशि दी जा रही है, सरकार को इन लोगों की श्रम-शक्ति को देश-विकास के कार्यों में नियोजित करने पर भी ध्यान देना चाहिए। मनरेगा योजना के अन्तर्गत कौशल विकास पर बल दिया जाना चाहिए।

योजना भले ही अकुशल श्रमिकों के लिए अवसर प्रदान करने पर केंद्रित है, लेकिन उन्हें अपने कौशल को विकसित करने और बढ़ाने का अवसर मिलने से यह योजना देश-विकास का माध्यम बन सकती है। वनीकरण, जल संरक्षण और सड़क निर्माण जैसी विभिन्न परियोजनाओं में उनकी भागीदारी से श्रमिकों को व्यावहारिक अनुभव प्राप्त होगा। वे नए कौशल सीख सकते हैं जिनका उपयोग मनरेगा द्वारा प्रदान किए जाने वाले भविष्य के रोजगार अवसरों के लिए किया जाएगा। मनरेगा योजना सड़कों, नहरों, तालाबों और सिंचाई सुविधाओं जैसी परिसंपत्तियों के विकास का समर्थन करते हुए रोजगार प्रदान करें, इस योजना को कनेक्टिविटी, कृषि उत्पादकता, वन-विकास से भी जोड़ा जाना चाहिए ताकि प्राकृतिक संसाधनों को बचाने, पारिस्थितिक संतुलन को बहाल करने और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में मदद मिल सके। जिससे ग्रामीण जीवन में नए मनुष्य का जन्म होगा।

रायपुर में 42 डिग्री तक पहुंच सकता है पारा, शाम को बादल

छत्तीसगढ़ के 12 जिलों में आज बारिश के आसार

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

छत्तीसगढ़ में एक तरफ पारा चढ़ रहा है तो दूसरी तरफ कई जगहों में हल्की बौछारें भी पड़ रही है। मौसम विभाग ने बताया है कि राज्य के कुछ हिस्सों में गरज-चमक के साथ हल्की से मध्यम बारिश हुई, और अगले कुछ दिनों तक यही ट्रेंड जारी रहने की संभावना है। साथ ही अधिकतम तापमान में 2 से 3 डिग्री की बढ़ोतरी भी देखने को मिल सकती हैं। पिछले 24 घंटे की बात करें तो राजधानी रायपुर में सबसे अधिक तापमान 41.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य से 1.8 डिग्री ज्यादा है।

दूसरी तरफ रायगढ़, सक्ति, सारंगढ़-बिलाईगढ़, बलौदा बाजार और बेमेतरा जिले में तेज हवाएं चली। सबसे कम न्यूनतम तापमान 22.0 डिग्री अंबिकापुर और जगदलपुर में दर्ज किया गया।

मौसम विभाग के अनुसार, 20 अप्रैल को रायपुर में आसमान साफ रहेगा, लेकिन दोपहर/शाम को आंशिक रूप से बादल छा सकते हैं।

अधिकतम तापमान 42एष्ट और न्यूनतम 27एष्ट के आसपास रह सकता है।अगले तीन दिनों तक गरज-चमक और बिजली गिरने की घटनाएं जारी रहने की संभावना है।राज्य के एक-दो स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश भी हो सकती है। रायपुर शहर के लिए 20 अप्रैल का पूर्वानुमान यह है कि आसमान साफ रहेगा, लेकिन दोपहर या शाम को हल्के बादल छा सकते हैं। अधिकतम तापमान 42 डिग्री और न्यूनतम तापमान 27 डिग्री के आसपास रहने की संभावना जताई गई है।बारिश की बात करें तो शनिवार को जगदलपुर और दरभा (बस्तर) में 2 सेमी बारिश हुई। जबकि दाढी (बेमेतरा), छोटेडोंगर (नारायणपुर) और गुरुर (बालोद) में 1 सेमी बारिश हुई। हालांकि प्रदेश के अधिकतर हिस्सों में मौसम शुष्क ही बना रहा।

विधायक के पीएसओ ने सर्विस रिवॉल्वर से की आत्महत्या

एक माह पहले ही लव मैरिज किया था, विधायक के घर के सामने मिला शव

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

छत्तीसगढ़ के भाटापारा में कांग्रेस विधायक इंद्र साव के पर्सनल सिक्योरिटी ऑफिसर (पीएसओ) ने रविवार को आत्महत्या कर ली। पीएसओ ने अपनी सर्विस रिवॉल्वर से खुद को गोली मार ली। घटना विधायक के घर के सामने स्थित उसके निवास पर हुई। यह घटना भाटापारा थाना क्षेत्र की है। जानकारी के अनुसार, डिगेश्वर गागड़ा कांग्रेस विधायक इंद्र साव के पर्सनल सिक्योरिटी ऑफिसर के तौर पर तैनात है। रविवार को डिगेश्वर ने विधायक के घर के ठीक सामने स्थित अपने क्वार्टर में अपनी सर्विस रिवॉल्वर से खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली। पीएसओ ने तीन राउंड गोली चलाई, जिनमें से एक ने उनकी जान ले ली। गोली की आवाज सुनकर लोग मौके पर पहुंचे। तब तक डिगेश्वर की मौत हो चुकी थी। सूचना मिलते ही भाटापारा पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू कर दी।विधायक इंद्र साव के अनुसार डिगेश्वर चुनाव के बाद से उनकी सुरक्षा में तैनात थे। उन्होंने एक माह पहले ही प्रेम विवाह किया था। विधायक ने बताया कि डिगेश्वर सामान्य रूप से रह रहे थे और उनके व्यवहार में कोई असामान्यता नहीं थी।एसपी विजय अग्रवाल ने बताया कि आत्महत्या का कारण अभी स्पष्ट नहीं हो पाया है। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट और विस्तृत जांच के बाद ही कोई निष्कर्ष निकाला जा सकेगा। पीएसओ बस्तर के बकावंड का रहने

लोरमी में बच्ची का अपहरण...9 दिन बाद भी सुराग नही

कांग्रेस ने निकाली बेटी बचाओ न्याय यात्रा; 10 किलोमीटर तक पैदल चले

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

मुंगेली जिले के लोरमी में 7 साल की बच्ची का अपहरण हुआ था। 9 दिन बाद भी उसका कोई सुराग नहीं मिल सका। कोसाबाड़ी गांव में 12 अप्रैल की रात से बच्ची गायब है लेकिन अब तक पुलिस बच्ची को नहीं ढूंढ पाई है। अब कांग्रेस ने न्याय की मांग की है। 20 अप्रैल रविवार को प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष दीपक बैज के नेतृत्व में बेटी बचाओ न्याय यात्रा निकाली गई। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने अपहृत बच्ची के गांव कोसाबाड़ी से लोरमी तक करीब 10 किलोमीटर की पदयात्रा की।लोरमी पहुंचने पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने थाने का घेराव किया। इस दौरान पुलिस और कार्यकर्ताओं के बीच धक्का-मुक्की हुई। कुछ कांग्रेस कार्यकर्ता इस दौरान चोटिल भी हुए।पीसीसी चीफ दीपक बैज ने कहा कि वे बच्ची के न्याय और हक की लड़ाई के लिए सड़क पर उतरे हैं। उन्होंने प्रदेश में बच्चियों के खिलाफ बढ़ती घटनाओं पर चिंता जताई।

इस मामले में कांग्रेस और भाजपा आमने-सामने आ गए हैं।अपहरण मामले को हुए लगभग 9 दिन बीत चुके हैं। बावजूद उसके पुलिस अभी तक बच्ची के संबंध में कुछ भी नहीं बता पा रही है। यही वजह है कि अब इस मामले को कांग्रेस तूल देकर भाजपा सरकार को कटघरे में खड़े करने का प्रयास कर रही।बच्ची अपहरणकांड की गुत्थी अब पूरी तरह से उलझ गई है और मासूम बच्ची अब तक अपने घर वापिस नहीं लौटी है। यात्रा में महिला कांग्रेस, युवक कांग्रेस और एनएसयूआई के सैकड़ों कार्यकर्ता शामिल हुए।

टीचर ने 9वीं की छात्रा से किया रेप...हुई प्रेग्नेंट

मरवाही में रिश्तेदार के परिचित ने भी किया दुष्कर्म, तबीयत बिगड़ी तो हुआ खुलासा

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

छत्तीसगढ़ के गौरेला-पेंड्रा-मरवाही जिले में आत्मानंद स्कूल की छात्रा से रेप किया गया। स्कूल के टीचर ने ही रेप की वारदात को अंजाम दिया। छात्रा अभी 10वीं क्लास पहुंची है और ये वारदात 9वीं क्लास के दौरान हुई। वहीं, इसके बाद छात्रा के रिश्तेदार के ही एक परिचित ने भी उसके साथ दुष्कर्म किया। छात्रा की जब तबीयत बिगड़ी और पता चला कि वह गर्भवती है तब इस मामले का खुलासा हुआ। पीड़िता के बयान और परिजनों की रिपोर्ट के आधार पर मरवाही और पेंड्रा थाने में दो अलग-अलग प्राथमिकी दर्ज की गई है। जानकारी के मुताबिक 16 साल की छात्रा जिले के आत्मानंद इंग्लिश मीडियम स्कूल में पढ़ती है। वहीं टीचर हिंदी मीडियम में पढ़ाता है। आरोपी टीचर युगल किशोर दिनकर (35 साल) ने छात्रा से जान-पहचान बढ़ाई। कुछ दिनों बाद वह छात्रा को बहला-फुसला कर अपने साथ बाहर ले गया। उसने छात्रा से जबरदस्ती शारीरिक संबंध बनाए। अलग-अलग जगह ले जाकर उसने छात्रा से कई बार रेप किया। इसी दौरान छात्रा की मुलाकात उसके रिश्तेदार के परिचित त्रिलोक आर्मो (30 साल) से हुई। स्टूडेंट को दोस्ती का झांसा दिया और उससे दुष्कर्म किया।

दोनों आरोपी पुलिस की हिरासत में

मामला दर्ज होते ही पुलिस ने दोनों मामले में आरोपियों को हिरासत में ले लिया है। फिलहाल पुलिस आगे की कार्रवाई में जुट गई है। घटना की जानकारी लगते ही सोशल मीडिया पर टीचर-छात्र के रिश्ते को खराब करने की बात लोग कर रहे हैं।

तबीयत बिगड़ी तो हुआ खुलासा...

कुछ दिन पहले छात्रा की तबीयत खराब हुई। परिजन उसे अस्पताल लेकर गए। जहां पता चला कि छात्रा गर्भवती है। नाबालिग ने सारी बात अपने परिजनों को बताई। आरोपी टीचर मरवाही थाना क्षेत्र का रहने वाला है और युवक पेंड्रा थाना क्षेत्र का रहने वाला है। छात्रा के परिजन शनिवार को थाने पहुंचे और दोनों थाने में आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है।

प्रतिबंधित क्षेत्र होने के बाद भी नहीं मान रहे लोग, पहले भी हो चुकी है मौत

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

छत्तीसगढ़ के रायगढ़ में गर्मी बढ़ते ही अब लोग पचधारी डैम तक पहुंच रहे हैं। यहां छोटे बच्चों से लेकर युवा और महिलाएं भी डुबकी लगा रहे हैं। जबकि स्टाप डैम में नहाना प्रतिबंधित है और यहां सुरक्षा के कोई उपाए भी नहीं है। इसके बाद भी प्रशासन इस पर कार्रवाई नहीं कर रहा है। पचधारी डैम में सबसे अधिक भीड़ रविवार को देखी जा रही है। आज भी कुछ इसी तरह का नजारा था। यहां सुबह से युवक-युवती, बच्चे, महिलाएं सभी नहाने के लिए पहुंचने लगे थे। दोपहर तक डैम में अच्छी खासी भीड़ हो चुकी थी। हर कोई गर्मी से राहत पाने पानी का मजा ले रहा था। इस दौरान किसी को यह याद नहीं रहा कि यह प्रतिबंधित क्षेत्र है। जिला प्रशासन और नगर निगम द्वारा स्टाप डैम के पास प्रतिबंधित क्षेत्र का बोर्ड भी लगाया गया, लेकिन उसे नजरअंदाज करते हुए लोग यहां नहाने पहुंच रहे हैं और संबंधित अधिकारियों के द्वारा इस पर कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है।

नाबालिगों ने किया गोह का शिकार

साल के पत्तों से ढककर घर ले जा रहे थे

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले के जंगल में दो नाबालिग ने एक गोह का शिकार कर दिया। टांगी से उसके सिर पर मारा और उसे खाने के लिए घर ले जा रहे थे। तभी वन अमले ने उन्हें पकड़ लिया। मामला धरमजयगढ़ वन परिक्षेत्र का है। जानकारी के मुताबिक धरमजयगढ़ वन परिक्षेत्र के बायसी जंगल के कक्ष क्रमांक 369 RF में दो नाबालिग शिकार के लिए घूम रहे थे। तभी गोह नजर आने पर उन्होंने टांगी से उसके सिर पर मारकर उसका शिकार कर लिया। मामले की सूचना वन अमले को मिली। ऐसे में वनकर्मी मौके पर पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि साल पेड़ के पत्तों से छिपाकर गोह को ले जा रहे हैं।वन अमले ने उन्हें रोका और पूछताछ की। दोनों ने बताया कि वे क्रोंधा गांव के रहने वाले हैं और इससे पहले भी करीब छह माह पहले उन्होंने गोह का शिकार किया था। जिसके बाद वन अमले ने बालकों के खिलाफ वन्यप्राणी संरक्षण अधिनियम के तहत अपराध दर्ज कर आगे की कार्रवाई में जुटी है। इस संबंध में धरमजयगढ़ रेंजर दयानंद सोनवानी ने बताया कि अपचारी बालको में एक की उम्र 14 और दूसरे की 17 साल है। उन्होंने पूछताछ में बताया कि गोह का शिकार कर उसे खाने के लिए ले जा रहे थे। मृत गोह का पंचनामा कर पोस्टमॉर्टम के बाद उसका अंतिम संस्कार कराया गया।

पूर्व विधानसभा स्पीकर मौत केस...अपोलो प्रबंधन पर FIR

फर्जी डॉक्टर नरेंद्र जान केम पर भी केस; 7 हार्ट पेशेंट की ले चुका है जान

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

बिलासपुर के अपोलो अस्पताल पर FIR हुई है। मामला 2006 में हुई छत्तीसगढ़ विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष पं. राजेन्द्र शुक्ल की मौत से जुड़ा हुआ है। उनके बेटे का कहना है कि, फर्जी कार्डियोलॉजिस्ट डॉक्टर नरेंद्र विक्रमादित्य उर्फ जान केम के इलाज से उनकी जान गई।डॉ. जान केम के इलाज से मध्यप्रदेश के दमोह में भी 7 हार्ट पेशेंट की मौत हुई है। फर्जी डॉक्टर जॉन केम की गिरफ्तारी पहले ही दमोह से हो चुकी है। अब अपोलो हॉस्पिटल पर भी डॉक्टर की नियुक्ति में लापरवाही को लेकर केस हुआ है। दमोह के मिशन अस्पताल में लंदन के कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. एन जोन केम के नाम पर फर्जी डॉक्टर ने ढाई महीने में 15 हार्ट ऑपरेशन कर डाले। आरोप है कि दिसंबर 2024 से फरवरी 2025 के बीच हुए इन ऑपरेशन में 7 मरीजों की मौत हो गई। इसका खुलासा तब हुआ जब एक मरीज के परिजन ने संदेह होने पर डॉक्टर की शिकायत की। इसके बाद मामला मानवाधिकार आयोग तक पहुंच गया। मामला 4 अप्रैल को सुर्खियों में आया, जब राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग के सदस्य प्रियंक कानूनगो ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट की। इसमें मिशन अस्पताल में 7 हार्ट पेशेंट्स की मौत और फर्जी डॉक्टर का जिक्र किया। 7 मरीजों की मौत के बाद जांच हुई तो आरोपी डॉक्टर नरेंद्र विक्रमादित्य यादव का बिलासपुर कनेक्शन सामने आया। बिलासपुर में भी ये कई लोगों की जान ले चुका है। इनमें सबसे बड़ा नाम छत्तीसगढ़ विधानसभा के पहले अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद शुक्ल का भी

पहले नोटिस जारी हुआ था

दिवंगत शुक्ल के बेटे का बयान सामने आने के बाद ष्टस्राह डॉ. प्रमोद तिवारी ने एक्शन लिया था। उन्होंने अपोलो अस्पताल प्रबंधन को नोटिस जारी किया। जवाब मांगा गया है कि, किस आधार पर डॉक्टर की नियुक्ति की गई थी। उसकी शैक्षणिक योग्यता से संबंधित दस्तावेज पेश करने को कहा है। साथ ही पूर्व विधानसभा अध्यक्ष समेत कई लोगों की मौत के मामले में डॉक्टर के खिलाफ क्या कार्रवाई की गई थी। इस मामले में FIR के साथ स्वास्थ्य विभाग की भी जांच जारी है।

जांच में अस्पताल की गंभीर लापरवाही...

आरोप है कि आरोपी डॉटर ने फर्जी डिग्री के आधार पर इलाज किया और लापरवाही से मौत का कारण बना। स्व. राजेन्द्र शुल के बेटे डॉटर प्रदीप शुला की शिकायत के बाद IPC की धारा 420, 465, 466, 468, 471, 304, 34 के तहत मामला दर्ज किया गया। FIR में अपोलो प्रबंधन को भी आरोपी बनाया गया है। आरोप है कि बिना दस्तावेज सत्यापन के अस्पताल प्रबंधन ने फर्जी डॉटर को भर्ती कर इलाज का मौका दिया। इसी से गंभीर लापरवाही हुई और मरीज की जान चली गई। पुलिस अब प्रबंधन की भूमिका की भी जांच कर रही है।

जलसंकट : एक कुएं पर टिकी 1700 लोगों की जिंदगी

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

कोंडागांव जिले के जोबा गांव में पानी की भीषण समस्या से लोग जूझ रहे हैं। गांव के 1700 लोग एक ही कुएं पर निर्भर हैं। गर्मी के मौसम में यह कुआं भी जवाब देने लगा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि कुएं में पानी 15 दिन और चल पाएगा। रोज सुबह 6 बजे से ही गांव की महिलाएं, बुजुर्ग और बच्चे पानी के बर्तन लेकर कुएं की तरफ निकल पड़ते हैं। लंबी दूरी तय करके गंदा पानी लाना मजबूरी बन गया है। यह स्थिति कई सालों से बनी हुई है। गांव की सरपंच सुपन कश्यप के अनुसार गांव से महज 5 किलोमीटर दूर कोसारटेडा बांध स्थित है। इस बांध से गांव को पानी मिल सकता है। कई बार आवेदन किया गया है, लेकिन कोई समाधान नहीं निकला।पूर्व जिला पंचायत सदस्य बालसिंग बघेल ने बताया कि प्रशासन को कई बार प्रोजेक्ट भेजा गया है। कोसारटेडा से पानी की सप्लाई संभव है, लेकिन कोई ध्यान नहीं दे रहा है। ग्रामीण तिजुराम, खिलेद्री, रूप सिंह, मानकू कश्यप और तिलतमा रूपसिंह का कहना है कि रोज पानी की तलाश में निकलना पड़ता है। गर्मी में स्थिति और भी गंभीर हो जाती है। कभी बारिश की आस में आसमान ताकते हैं, तो कभी दूसरे गांव से पानी लाना पड़ता है।

आदिवासी सबसे बड़े हिंदू ,मुख्यमंत्री बोले

एजेंसियां सनातन को कमजोर करने में लगी हैं

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा है कि आदिवासी सबसे बड़े हिंदू हैं। हमारे आदिवासी लोग सरना को मानते हैं, जहां देवी-देवता का प्रथम स्वरूप स्थापित करते हैं। बस्तर के बैगा उसके पुजारी होते हैं। गौरी-गौरा वहां विराजते हैं। गौरी-गौरा और शिव-पार्वती दोनों एक ही हैं। आदिवासी बहुत पहले से उन्हें पूछते पूजते हैं, इसलिए मैंने कहा, आदिवासी सबसे बड़े हिंदू हैं। आज देश में कई एजेंसियां सनातन को कमजोर करने का काम कर रही हैं, जोकि गलत है। ये बातें विष्णुदेव साय ने रायपुर में महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती पर धर्मरक्षा महायज्ञ में कहीं। कार्यक्रम में गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत भी शामिल थे। प्रदेश की राजधानी रायपुर के डीडीयू ऑडिटोरियम में ये कार्यक्रम आयोजित किया गया था। धर्मरक्षा महायज्ञ एवं वैदिक सनातन संस्कृति सम्मेलन नाम के इस कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा तैयार पुस्तिका "चुनौतियां का चिंतन" का विमोचन किया। मुख्यमंत्री साय ने सभा को संबोधित करते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती को यादकर कहा- आर्य समाज को मानव कल्याण का कार्य करते हुए आज 150 वर्ष पूरे हो गए हैं। आर्य समाज के द्वारा निरंतर देश सेवा, धर्म-संस्कृति की रक्षा के साथ जनजागरण का कार्य किया जा रहा है। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि हमारे प्रधानमंत्री जी प्राकृतिक खेती और देशी नस्ल की गायों के उपयोग को बढ़ावा देने पर विशेष जोर दे रहे हैं। प्रदेश सरकार निश्चित रूप से इस दिशा में अपने प्रयासों को और अधिक गति देगी। साय ने कहा कि पिछले डेढ़ वर्षों में हमारी सरकार ने मोदी की गारंटियों को पूरा करने का कार्य किया है। गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने महर्षि दयानंद की संपूर्ण जीवन-यात्रा और उद्देश्यों पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक कृषि और देशी गौवंश की रक्षा एवं उनका संवर्धन अत्यंत आवश्यक है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर यदि हम गौपालन को लाभकारी बनाएंगे, तो समाज में उसकी रक्षा के लिए स्वाभाविक चेतना विकसित होगी। इससे सड़कों पर पशुओं के विचरण की समस्या स्वतः समाप्त हो जाएगी। उन्होंने कहा कि जैविक खेती के माध्यम से हम स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकते हैं।

सतीश थौरानी चेंबर के नए अध्यक्ष ,शपथ ग्रहण में पहुंची सरकार

पहली बार सर्वसम्मति से पदाधिकारी आए

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

रविवार को छत्तीसगढ़ चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के पदाधिकारियों ने शपथ ली। नया प्रदेश अध्यक्ष सतीश थौरानी को बनाया गया है। रायपुर के शहीद स्मारक भवन में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, विधानसभा अध्यक्ष डॉ रमन सिंह और पूर्व राज्यपाल रमेश बैस बतौर अतिथि पहुंचे। प्रदेश पदाधिकारियों का इस बार चुनाव नहीं हुआ। सर्व सम्मति से उन्हें चुना गया। इसे लेकर छरूने कहा कि 12 लाख व्यापारी पूरे प्रदेश में संगठन से जुड़े हैं। ऐसे में सर्व सम्मति से अध्यक्ष का चुना जाना बड़ी बात है, आगे भी इस परंपरा को कायम रखिए। चेंबर में 33 जिला उपाध्यक्ष और 33 जिला मंत्री समेत कुल 69 पदों के परिणाम घोषित हुए। इनमें 69 पदों में से 58 पर निर्विरोध निर्वाचन, 2 पदों पर मतदान से निर्वाचन हुआ और 9 पद रिक्त रह गए। इसके तहत प्रदेश अध्यक्ष सतीश थौरानी, प्रदेश महामंत्री अजय भसीन, प्रदेश कोषाध्यक्ष निकेश बरडिया निर्वाचित हुए हैं।फरवरी से जारी थी चुनावी प्रक्रिया छत्तीसगढ़ के 33 प्रशासनिक जिलों में से नारायणपुर को छोड़कर 32 जिलों में चेंबर के कुल 27480 सदस्य हैं। 7 जिले बलरामपुर, खैरागढ़-छुई खदान-गंडई, मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी, कोंडागांव, बस्तर, सुकमा, बीजापुर में सदस्यों की संख्या 50 से कम होने से चेंबर संविधान अनुसार इन जिलों में उपाध्यक्ष और मंत्री पद पर चुनाव नहीं हुए। इस प्रकार 25 जिले और भिलाई को चेंबर संविधान में चेंबर जिला का दर्जा दिए जाने से कुल 26 जिलों में चुनाव प्रक्रिया फ़रवरी से चल रही थी। इनमें से महासमुंद और रायगढ़ में ही मतदान द्वारा निर्वाचन हुआ। वहीं गोरेला-पेंड्रा-मरवाही, जशपुर और कबीरधाम जिला में उपाध्यक्ष और मंत्री का नामांकन ही निरंक रहे। इसी प्रकार कोरबा जिला, सरगुजा और सारंगढ़-बिलाईगढ़ जिला में जिला मंत्री पद पर भी नामांकन निरंक रहा। जिसके कारण 9 पद निरंक रहे।

बेंगलुरु एयरपोर्ट पर खड़े इंडिगो प्लेन से टकराया टेंपो

बेंगलुरु (एजेंसी)। बेंगलुरु के केम्पेगौड़ा इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर एक टेंपो ट्रैवलर की इंडिगो प्लेन से टक्कर की फोटो वायरल हो रही है। ये हादसा शुक्रवार (18 अप्रैल) दोपहर का है, जब एक टेंपो ट्रैवलर खड़ी हुई इंडिगो प्लेन से टकरा गया, जिसमें ड्राइवर को हल्की चोटें आईं। हादसा दोपहर करीब 12ः15 बजे एयरपोर्ट के अल्फा पार्किंग बे 71 पर हुआ। एयरपोर्ट प्रशासन ने बताया कि टेंपो एक थर्ड-पार्टी ग्राउंड हैंडलिंग एजेंसी का था, और उसे एयरपोर्ट स्टाफ को छोड़ने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा था। जिस विमान से टेंपो टकराया, वह इंजन रिपेयर के चलते पहले से ही ग्राउंडेड था और अभी संचालन नहीं होना था। इस वजह से कोई भी यात्री मौजूद नहीं था। इंडिगो ने अपने बयान में कि हादसा ड्राइवर की लापरवाही की वजह से हुआ। टेंपो विमान से जा टकराया जिससे वाहन की छत और चालक की साइड बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। हादसे में ड्राइवर को हल्की चोटें आई हैं, जबकि विमान को कितना नुकसान हुआ है, इसका मूल्यांकन किया जा रहा है।

एयर होस्टेस से 4 मिनट तक डिजिटल रेप किया

गुरुग्राम (एजेंसी)। हरियाणा के गुरुग्राम मेदांता अस्पताल का टेक्नीशियन 4 मिनट तक एयर होस्टेस के प्राइवेट पार्ट से छेड़छाड़ करता रहा। इसका खुलासा गुरुग्राम पुलिस के हाथ लगी सीसीटीवी फुटेज से हुआ है। यह फुटेज उसी दिन की है, जिस दिन मेदांता अस्पताल के टेक्नीशियन ने एयर होस्टेस का डिजिटल रेप किया। पुलिस सूत्रों के मुताबिक दीपक का काम आईसीयू में चल रही मशीनों की जांच करना है। यह जांच रूटीन में होती है कि मशीन में कोई खराबी नहीं है। एक मशीन की जांच में 2 से 5 मिनट का टाइम लगता है। अगर मशीन ठीक हो तो इतनी देर में टेक्नीशियन बाहर आ जाता है। जिस दिन एयर होस्टेस का डिजिटल रेप हुआ, उस दिन भी मशीनें ठीक थीं। इसके बावजूद पहले से एयर होस्टेस से छेड़छाड़ की मंशा लिए गया दीपक 16 मिनट तक वहां रहा। इसमें से 8 मिनट उसने एयर होस्टेस के बैड के पास गुजारे। करीब 4 मिनट तक वेस्टबैंड (कमरबंद) का साइज चेक करने के बहाने वह चादर के अंदर हाथ डालकर एयर होस्टेस के प्राइवेट पार्ट से छेड़छाड़ करता रहा।

अमृतपाल सिंह पर एक साल और बढ़ा एनएसए

अमृतसर (एजेंसी)। खडूर साहिब से सांसद और खालिस्तान समर्थक अमृतपाल सिंह पर लगाया गया राष्ट्रीय सुरक्षा कानून (एनएसए) एक साल के लिए और बढ़ा दिया गया है। एनएसए बढ़ाए जाने को लेकर एक दस्तावेज सामने आया है। जिसके बाद यह साफ हो गया है कि अमृतपाल सिंह अब एक साल और असम की डिब्रूगढ़ जेल में रहेंगे। अमृतपाल सिंह ने 18 अप्रैल को इस पर हस्ताक्षर भी कर दिए हैं। नया एनएसए 23 अप्रैल से लागू होगा। अगर इसकी अवधि तीसरी बार बढ़ाई जाती है तो परिवार पंजाब हरियाणा हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटा सकता है। अमृतपाल सिंह के पिता तरसेम सिंह ने नाराजगी जताते हुए कहा कि देश में सिखों के लिए अलग कानून चल रहा है।

मुख्यमंत्री ने रामपुरा नीमच में किया विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन और नेतृत्व में जारी विकास प्रक्रिया से मध्यप्रदेश का परिदृश्य निरंतर बदल रहा है। स्कूल शिक्षा हो, पर्यटन हो या औद्योगिक गतिविधियों का विस्तार सभी क्षेत्रों में प्रदेश प्रगति पथ पर अग्रसर है। सभी जिलों में विकास और जनकल्याण गतिविधियों के लिए अनुकूल वातावरण विद्यमान है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव नीमच जिले के रामपुरा में आयोजित विकास कार्यों के लोकार्पण-शिलान्यास कार्यक्रम में जनसभा को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नीमच-मंदसौर क्षेत्र राजस्थान का द्वार है और रामपुरा का प्राकृतिक सौंदर्य अभिभूत करने वाला है। औषधीय वनस्पति की राजधानी नीमच-मंदसौर को चीता प्रोजेक्ट और औद्योगिक गतिविधियों के विस्तार से नई पहचान मिलेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी की पहल पर मध्यप्रदेश में चीतों का पुनर्वास आरंभ हुआ। गांधी सागर क्षेत्र में चीतों के आने से मंदसौर-नीमच क्षेत्र में पर्यटन गतिविधियों का विस्तार होगा और रोजगार के नए अवसर निर्मित होंगे, गांवों में होमस्टे जैसी सुविधाएं विकसित होंगी। स्थानीय व्यंजनों की पहचान वैश्विक स्तर पर बनेगी।

इन सब गतिविधियों की ओर विश्व, आशा और जिज्ञासा से देख रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नीमच और मानसा में छोटे ट्रैक्टरों को स्वच्छता रथ के रूप में विकसित करने की पहल की प्रशंसा की।

उन्होंने कहा कि औषधीय वनस्पतियों की खेती के लिए मंदसौर, नीमच राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है, इसके लिए यहां के किसान अभिनंदनीय हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि किसानों से 2600 रुपए प्रति क्विंटल की दर से गेहूं खरीदा जा रहा है। यह किसानों की बेहतरी के प्रति राज्य सरकार की प्रतिबद्धता की अभिव्यक्ति है। प्रदेश निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर है, इसी का परिणाम है कि वर्तमान में प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय 1,53,280 रुपए है। यह प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में सबका साथ-सबका विकास की भावना से चलने का परिणाम है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गांधी सागर डैम का निर्माण 1960 में हुआ। जिसके कारण कई गांव डूबे, लेकिन डैम के आसपास के गांव को न तो पानी लेने की सुविधा दी गई और न ही सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराई गई। राज्य सरकार ने गांधी सागर डैम के जल से सब ओर सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराने का निर्णय लिया। जनता की बेहतरी के हर संभव प्रयास के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है।

फडणवीस बोले- उद्धव-राज ठाकरे साथ आए तो खुशी होगी

मुंबई (एजेंसी)। मनसे चीफ राज ठाकरे और उद्धव ठाकरे के राजनीति में साथ आने की खबरों पर संजय राउत ने कहा कि अब तक गठबंधन नहीं हुआ है। अभी इमोशनल टॉक चल रही है। इससे पहले उन्होंने एक शर्त रखी थी। कहा था कि राज साहब को उद्धव के साथ आने के लिए अपने घर में दुश्मनों को रखना बंद करना होगा। इस बीच भाजपा नेता नितेश राणे ने रविवार को चौंकाने वाला बयान दिया। उन्होंने शिवसेना यूबीटी के प्रमुख उद्धव से सवाल किया कि क्या गठबंधन के लिए उन्होंने पत्नी रश्मि ठाकरे से परमिशन ली है।

भाजपा सांसद बोले- सुप्रीम कोर्ट सीमाएं लांघ रहा

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने 8 अप्रैल को राष्ट्रपति को विधेयकों पर फैसला लेने के लिए एक समय सीमा तय करने की बात कही थी। इस पर अब विवाद बढ़ता जा रहा है। पहले उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कहा था कि अदालतें राष्ट्रपति को आदेश नहीं दे सकतीं। उनके बाद 19 अप्रैल को भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने कहा कि कोर्ट अपनी सीमाओं से बाहर जा रहा है। अगर हर किसी को सारे मामलों के लिए सर्वोच्च अदालत जाना पड़े तो संसद और विधानसभा

बंद कर देनी चाहिए। उन्होंने कहा, संसद इस देश का कानून बनाती है। क्या आप उस संसद को निर्देश देंगे। देश में गृह युद्ध के लिए चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया संजीव खन्ना जिम्मेदार हैं। वहीं धार्मिक युद्ध भड़काने के लिए सुप्रीम कोर्ट जिम्मेदार है। दरअसल ये मामला तमिलनाडु गवर्नर और राज्य सरकार के बीच हुए विवाद से उठा था। सुप्रीम कोर्ट ने 8 अप्रैल को आदेश दिया कि राज्यपाल के पास कोई वीटो पावर नहीं है। वहीं बिल पर राष्ट्रपति को 3 महीने के भीतर फैसला लेना होगा। यह ऑर्डर 11 अप्रैल को सामने आया था। दुबे के बयान से भाजपा का किनारा हालांकि, निशिकांत के बयान से बीजेपी ने किनारा कर लिया है।

कर्नाटक जनेऊ विवाद- कॉलेज प्रिंसिपल और स्टाफ मेंबर सस्पेंड

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक के बीदर जिले के साई स्पूर्थी पीयू कॉलेज में 17 अप्रैल को एक स्टूडेंट ने जनेऊ उतारने से मना किया तो उसे एग्जाम में बैठने नहीं दिया गया। शनिवार को मामला सुर्खियों में आया और इसपर विवाद हुआ। अब मामले में प्रिंसिपल डॉ. चंद्रशेखर बिरादर और स्टाफ मेंबर सतीश पवार को सस्पेंड कर दिया है।

ऐसा ही एक मामला शिवमोगा जिले के आदिचुंचनगिरी स्कूल से भी सामने आया था, जहां कॉमन इंट्रेंस टेस्ट एग्जाम देने आए तीन स्टूडेंट का जनेऊ उतरवाया गया। कर्नाटक ब्राह्मण महासभा की तरफ से पुलिस में शिकायत दर्ज कराई गई। आरोपियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है।

पहला केस- बीदर में स्टूडेंट से कहा- जनेऊ काटो कर्नाटक के बीदर में एग्जाम देने गए स्टूडेंट सुचिव्रत कुलकर्णी ने बताया, 17 अप्रैल को मेरा मैथ का सीईटी एग्जाम था। जब मैं एग्जाम सेंटर पहुंचा तो कॉलेज मैनेजमेंट ने मेरी जांच की और मेरा जनेऊ देखा। उन्होंने मुझसे कहा कि इसे काट दो या हटा दो, तभी वे मुझे परीक्षा में बैठने देंगे। 45 मिनट तक मैं उनसे अनुरोध करता रहा, लेकिन आखिरकार मुझे घर वापस आना पड़ा।

जम्मू-कश्मीर सीएम फ्लाइट डायवर्जन पर भड़के

नई दिल्ली (एजेंसी)। अब्दुल्ला इंडिगो की फ्लाइट से श्रीनगर से दिल्ली आ रहे थे। दिल्ली एयरपोर्ट पर भीड़ और गड़बड़ी की वजह से पहले तो फ्लाइट को 3 घंटे तक लैंड नहीं कराया, फिर जयपुर डायवर्ट कर दी गई। इंडिगो की फ्लाइट को जयपुर डायवर्ट किए जाने के बाद एयरपोर्ट अधिकारियों ने रविवार को सफाई दी। उन्होंने कहा-फ्लाइट डायवर्जन मौसम में अचानक बदलाव और रनवे अपग्रेडेशन के चलते हुआ। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला इसी फ्लाइट से ट्रैवल कर रहे थे। वे शनिवार रात दिल्ली एयरपोर्ट पर फ्लाइट डायवर्जन को लेकर भड़क गए । उन्होंने कहा- दिल्ली एयरपोर्ट पर पूरी तरह बर्बादी का नजारा है। अथॉरिटी ने उमर अब्दुल्ला को जवाब देते हुए लिखा, डियर मिस्टर अब्दुल्ला, जैसा कि आप जानते हैं, हमने दिल्ली में अचानक बदलते मौसम

और हवा की दिशा को लेकर कई एडवाइजरी पहले ही जारी की हैं। यह काम सभी संबंधित एजेंसियों से सलाह लेने के बाद शुरू किया गया था।% एयरपोर्ट ने कहा कि रनवे 10/28 को 8 अप्रैल से अपग्रेड के लिए बंद किया गया है।

मुर्शिदाबाद हिंसा- बाप-बेटे हत्या मामले में चौथी गिरफ्तारी

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के हिंसा प्रभावित मुर्शिदाबाद में हिंसक प्रदर्शन के दौरान एक बाप-बेटे की हत्या के आरोप में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है। यह मामले में चौथी गिरफ्तारी हैं। गिरफ्तार व्यक्ति की पहचान जाफराबाद के पड़ोसी गांव सुलिताला पुरबापारा निवासी जियाउल शेख के रूप में हुई है। आरोपी 12 अप्रैल से फरार था। शेख को पश्चिम बंगाल पुलिस के विशेष कार्य बल और विशेष जांच दल ने शनिवार को उसके ठिकाने से गिरफ्तार किया था। पुलिस के अनुसार, यह व्यक्ति मुख्य आरोपियों में से एक है, जिसने मृतक के घर तोड़फोड़ करने के लिए भीड़ को उकसाया था और 12 अप्रैल को हरगोबिंदो दास और उनके बेटे चंदन दास की हत्या कर दी। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज और शेख के मोबाइल फोन लोकेशन से उसका पता लगाया। इससे पहले पुलिस ने दो भाइयों कालू नादर और दिलदार साथ ही एक अन्य आरोपी इंजामुल हक को गिरफ्तार किया था। 17 अप्रैल को कलकत्ता हाईकोर्ट ने हिंसा प्रभावित मुर्शिदाबाद जिले में केंद्रीय बलों की तैनाती जारी रखने के आदेश सुरक्षित रख लिया। हाईकोर्ट ने सुझाव दिया कि राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, पश्चिम बंगाल राज्य मानवाधिकार आयोग और राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण से एक-एक सदस्य वाला पैनल हिंसा प्रभावित इलाकों का दौरा करे।

बृजभूषण बोले- यूपी में विधायकों की औकात जीरो

गोंडा (एजेंसी)। आज यूपी में विधायकों की औकात जीरो हो गई है। काम निकलवाने के लिए डीएम के पैर छूते हैं। उनकी मर्जी होगी तो काम होगा, नहीं तो नहीं होगा। इस विषय पर ज्यादा नहीं बोलूंगा, नहीं तो आग लग जाएगी। सारा पावर एक जगह सिमट गया है। अगर वह पावर अच्छा काम करेगा तो सबकी नैया पार हो जाएगी। अगर नहीं किया, तो सभी फेल हो जाएंगे।

1- अब मेरे फोन का असर किसी अधिकारी नहीं रहा आज की राजनीति का तरीका बदल गया है। अब मेरे फोन का भी किसी अधिकारी पर असर नहीं है। आम आदमी तो हमेशा पिसता रहता है, लेकिन जो चल रहा है, उसे चलने देना चाहिए। आज विधायक की हैसियत ग्राम

प्रधान से भी नीचे हो गई है। मैं सभी जगह की बात नहीं कर रहा हूं, लेकिन कई जगह हालात ऐसे ही हैं। विधायकों के कार्यकाल के 3 साल हो गए हैं। जनता के बीच किस उपलब्धि के साथ जाएंगे? इसका उत्तर न मेरे पास है, न ही किसी विधायक के पास। यह पूरी तरह उत्तर प्रदेश सरकार पर निर्भर है। इसमें विधायकों की कोई गलती नहीं है।

भारत आएंगे अमेरिकी वाइस प्रेसिडेंट जेडी वेंस

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेम्स डेविड वेंस दौरे पर आ रहे हैं। वे शुक्रवार को परिवार के साथ इटली पहुंच गए। इसके बाद 21 अप्रैल को भारत पहुंचेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से दिल्ली में मुलाकात के बाद वेंस 21 अप्रैल की रात को जयपुर पहुंच जाएंगे। वेंस 24 अप्रैल तक जयपुर में रहेंगे। इस दौरान 22 अप्रैल को राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में बिजनेस समिट को भी संबोधित करेंगे। सूत्रों के अनुसार, जेडी वेंस के कार्यक्रम में थोड़ा बदलाव हुआ है। अब वेंस 21 अप्रैल की रात को जयपुर पहुंचेंगे। 22 को आमेर और बिजनेस समिट में हिस्सा लेंगे। 23 अप्रैल की सुबह अमेरिकी एयर फोर्स के विशेष विमान से उत्तर प्रदेश के आगरा के लिए रवाना होंगे। लगभग तीन घंटे तक ताजमहल देखने के बाद दोपहर को वेंस एक बार फिर जयपुर पहुंचेंगे। 23 अप्रैल की दोपहर को वे जयपुर सिटी पैलेस जाएंगे। इसके बाद 24 अप्रैल की सुबह 6 बजकर 30 मिनट पर वाशिंगटन रवाना हो जाएंगे।

ममता बनर्जी बोलीं- बीजेपी और आरएसएस हमें बांटना चाहते हैं

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने आरोप लगाया कि भाजपा और ऋस्स ने पश्चिम बंगाल में दुर्भावनापूर्ण झूठा अभियान शुरू किया है। ममता ने शनिवार देर रात दो पेज का खुला पत्र जारी कर ये आरोप लगाए। उन्होंने मुर्शिदाबाद हिंसा का जिक्र करते हुए कहा- ये ताकतें उकसावे पर हुई दुर्भाग्यपूर्ण घटना का इस्तेमाल बांटने वाली राजनीति के लिए कर रही हैं। ममता ने लोगों से

शांति बनाए रखने का अपील की। साथ ही कहा कि बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक समुदायों को एक-दूसरे का ख्याल रखना चाहिए। उन्होंने लिखा- हम सांप्रदायिक दंगों की निंदा करते हैं और उन्हें रोकना चाहिए। दंगों के पीछे के अपराधियों से सख्ती से निपटा जा रहा है। लेकिन, हमें आपसी अविश्वास से बचना चाहिए। वक्फ संशोधन कानून के खिलाफ 11 अप्रैल को पश्चिम बंगाल के कई जिलों में विरोध प्रदर्शन हुए। 12-13 अप्रैल को प्रदर्शन हिंसक हो गए। इस दौरान पिता-पुत्र की हत्या कर दी गई थी। शनिवार का राज्यपाल सीवी आनंद बोस भी मुर्शिदाबाद पहुंचे थे। ममता ने लेटर में लिखा- भाजपा और उसके सहयोगी अचानक पश्चिम बंगाल में बहुत आक्रामक हो गए हैं।

इन सहयोगियों में ऋस्स भी शामिल है। मैंने पहले ऋस्स का नाम नहीं लिया, लेकिन अब मुझे उनकी पहचान करने के लिए मजबूर किया जा रहा है। इन सभी ने साथ मिलकर राज्य में एक दुर्भावनापूर्ण झूठा अभियान शुरू किया है।

सरकारी इंजीनियर के जयपुर सहित 19 ठिकानों पर रेड

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग के सुपरिटेंडेंट इंजीनियर अशोक जांगिड़ के जयपुर सहित 6 जिलों में स्थित ठिकानों पर छापेमारी चल रही है। रविवार अल सुबह टीमें प्रदेश के अलग-अलग शहरों में पहुंचीं। आय से अधिक संपत्ति के मामले में यह कार्रवाई हुई है। अशोक जांगिड़ की फिलहाल बांसवाड़ा में तैनाती है। एसीबी से मिली जानकारी के अनुसार- अशोक जांगिड़ के जयपुर शहर, पावटा (कोटपूतली), मौजमाबाद (जयपुर), उदयपुर स्थित खान एवं भू-विज्ञान विभाग के जोन ऑफिस, झाड़ोल (उदयपुर) के कोच्छला, जावद स्थित खनिज लीज, अजमेर, मालपुरा (टोंक) के विभिन्न ठिकानों के साथ-साथ पीएचईडी कार्यालय बांसवाडा, टोंक, अजमेर, जयपुर व उप पंजीयक कार्यालय पावटा, मौजमाबाद में टीमें सर्च में लगी हैं।

बक्सर में खड़गे बोले-राहुल-प्रियंका गांधी को डराने की कोशिश हो रही, मोदी सरकार के 11 झूठ गिनाए

बक्सर (एजेंसी)। बक्सर में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा- मोदी-नीतीश की जोड़ी सिर्फ कुर्सी के लिए हैं। बिहार के विकास के लिए नहीं है। एक बार हमारी गोद में आते हैं, फिर लगा कि बीजेपी आनेवाली है तो नीतीश इधर से उधर चले जाते हैं। ये देश के लिए सही नहीं है। खड़गे आज यानी रविवार को एक दिन के दौरे पर बिहार के बक्सर पहुंचे थे। अपने 50 मिनट के भाषण में कांग्रेस अध्यक्ष ने नेशनल हेराल्ड केस, वक्फ कानून, मोदी सरकार के वादे और नीतीश कुमार के दल बदलने पर निशाना साधा। उन्होंने गांधी

परिवार की कुर्बानी याद दिलाई, साथ ही केंद्र सरकार के 11 झूठ भी गिनवाएं। कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे ने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि मोदी समझते हैं कि बिहार वालों को ज्ञान की कमी है। जबकि सारे ज्ञानी लोग बिहार की भूमि से आते हैं। वसूलों पर चलते हैं। खड़गे ने कहा- मोदी जी ने जबरन वक्फ कानून बनाया। जहां सालों से झगड़ा नहीं था, अब वहां झगड़ा करना चाहते हैं। आरएसएस-भाजपा गरीबों, पिछड़ों, महिलाओं के दोस्त हो नहीं सकते। मनु स्मृति में लिखा है कि महिलाओं को शिक्षित नहीं करना चाहिए। पवित्र काम में शामिल नहीं करना चाहिए, जबकि बाबा साहेब ने इन्हें सम्मान दिया। नेशनल हेराल्ड केस का जिक्र करते हुए कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि %नेशनल हेराल्ड समेत 3 न्यूज पेपर पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भारतीयों की आवाज अंग्रेजों तक पहुंचाने के लिए निकाला।

जम्मू-कश्मीर में बादल फटने से तबाही

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में पिछले कई दिनों से बारिश हो रही है। रामबन जिले के सेरी बागना इलाके में रविवार सुबह बारिश के बाद बादल फटने से 3 लोगों की मौत हो गई। पुलिस ने करीब 100 लोगों को रेस्क्यू किया। सूत्रों ने बताया कि बादल फटने से अचानक बाढ़ आ गई। पहाड़ का मलबा गांव की तरफ आ गया, जिसके चपेट में कई लोग और घर आ गए। फिलहाल रेस्क्यू ऑपरेशन जारी है। उधर, रामबन जिले के बनिहाल इलाके में कई जगह लैंडस्लाइड हुई हैं। इसकी वजह से जम्मू-श्रीनगर नेशनल हाईवे बंद कर दिया गया है। सैकड़ों वाहन फंसे हुए हैं।

किश्तवाड़-पद्दर मार्ग भी बंद है। यहां वाहनों की आवाजाही रोक दी गई है। अधिकारियों ने मौसम साफ होने के बाद ही हाईवे पर सफर करने की अपील की है। लैंडस्लाइड के कुछ वीडियो सामने आए हैं, जिसमें पहाड़ से मलबा गिरते देखा जा सकता है। कुछ इलाकों में पहाड़ का मलबा सड़कों और रिहायशी इलाकों तक पहुंच गया है। एक वीडियो में तीन-चार टैंकर और कुछ अन्य गाड़ियां मलबे में पूरी तरह दबी हुई दिख रही हैं। इसके अलावा होटल और घर भी मलबे से प्रभावित दिख रहे हैं।एक चश्मदीद ने बताया- जम्मू से श्रीनगर जाने के दौरान बारिश तेज हो गई तो मैंने रामबन में रुक गया। रात करीब 10 बजे मैंने होटल में चेकइन किया। रात करीब 3 बजे शोर-शराबे के बीच मेरी नींद खुली। मैं होटल से नीचे आया तो देखा पानी तेजी से ऊपर की ओर भर रहा था। नीचे का स्टाफ होटल छोड़कर भाग चुका था और हम सारे लोग फंस गए थे। चश्मदीद ने होटल की ओर इशारा करते हुए बताया कि यह होटल तीन मंजिला है। इसकी दो मंजिलें नीचे मलबे में दबी हुई हैं। यह तीसरी मंजिल दिख रही है। करीब 8-10 गाड़ियां नीचे दब गई हैं। मैंने 15 दिन पहले ही नई गाड़ी ली थी, वह भी मलबे में दबी है।उस समय हम 15 लोग ऊपर फंसे थे। होटल का कुछ स्टाफ जो ऊपरी फ्लोर पर था, वह भी फंस गया था। सामने का रास्ता बंद हो गया था। किसी तरह हम सभी ने होटल के पीछे से निकलकर अपनी जान बचाई। चश्मदीद ने बताया

के राहुल ने आईपीएल में पूरा किया छक्कों का दोहरा शतक

नई दिल्ली (एजेंसी)। गुजरात टाइटंस के खिलाफ दिल्ली के बल्लेबाज केएल राहुल ने तेज शुरुआत की, लेकिन वो बड़ी पारी खेलने से चूक गए। तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी करने आए राहुल ने मैदान पर आते ही चार्ज करना शुरू कर दिया, लेकिन एक यॉर्कर पर वो चूक गए और प्रसिद्ध कृष्णा ने उन्हें एलबीडब्ल्यू करते हुए पवेलियन का रास्ता दिखा दिया। आईपीएल 2025 के 35वें लीग मैच में गुजरात टाइटंस के खिलाफ दिल्ली के बल्लेबाज केएल राहुल ने तेज शुरुआत की, लेकिन वो बड़ी पारी खेलने से चूक गए। तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी करने आए राहुल ने मैदान पर आते ही चार्ज करना शुरू कर दिया, लेकिन एक यॉर्कर पर वो चूक गए और प्रसिद्ध कृष्णा ने उन्हें एलबीडब्ल्यू करते हुए पवेलियन का रास्ता दिखा दिया। केएल राहुल ने इस मैच में यानी गुजरात के खिलाफ 14 गेंदों पर 28 रन की पारी 200.00 की स्ट्राइक रेट के साथ खेली। इस दौरान उन्होंने एक बेहतरीन छक्का और 4 चौके भी जड़े। राहुल ने इस एक छक्के के दम पर आईपीएल में छक्कों का दोहरा शतक यानी 200 छक्के भी पूरे किए। राहुल इस लीग में 200 छक्के लगाने वाले छठे भारतीय बल्लेबाज बने जबकि ओवरऑल वो ऐसा करने वाले 11वें प्लेयर बने।

बीसीसीआई ने निकाला केकेआर ने अपनाया

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय टीम के सहायक कोच के पद से हटाए जाने के कुछ दिनों बाद ही अभिषेक नायर की आईपीएल में वापसी हुई है। वह केकेआर के सपोर्ट स्टाफ में शामिल हो गए हैं। नायर पहले केकेआर के लिए काम कर चुके हैं और एकेडमी में नए खिलाड़ियों को तैयार करने में मुख्य भूमिका निभा रहे थे। आईपीएल 2024 के दौरान वह टीम के साथ थे, जब श्रेयस अय्यर कीकप्तानी में टीम चैंपियन बनी थी। द इंडियन एक्सप्रेस ने पहले जानकारी दी थी घरेलू सरजमीं और विदेश में टेस्ट क्रिकेट में बल्लेबाजों की लगातार विफलताओं ने नायर की भूमिका पर सवाल खड़े किए हैं। जानकारी के अनुसार ऑस्ट्रेलिया दौरे के तुरंत बाद आयोजित समीक्षा बैठक के दौरान टीम प्रबंधन में कई लोगों ने नायर की भूमिका पर सवाल उठाए थे। जबकिखिलाड़ियों से भी प्रतिक्रिया मांगी गई थी। ये पहला मामला है जब बीसीसीआई ने मुख्य कोच द्वारा चुने गए किसी सहयोगी स्टाफ के अनुबंध को समाप्त करने का कदम उठाया है।

बीसीसीआई ने सपोर्ट स्टाफ के सदस्यों अभिषेक नायर और फील्डिंग कोच टी दिलीप और कंडीशनिंग कोच सोहम देसाई को हटा दिया है। इंग्लैंड दौरे पर जाने से पहले भारतीय टीम के पास एक नया मालिशिया होगा। बॉर्डर-गावस्कर सीरीज में हुई हार की समीक्षा के बाद बोर्ड के पदाधिकारियों ने ये फैसले लिए।

लखनऊ सुपर जांयट्स के खिलाफ मुकाबले से संजू सैमसन बाहर

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 का 36वां मैच राजस्थान रॉयल्स और लखनऊ सुपर जायंट्स के बीच खेला जा रहा है। जहां लखनऊ के कप्तान ऋषभ पंत ने टॉस जीतकर रॉयल्स की टीम को पहले गेंदबाजी का न्योता दिया है। वहीं संजू सैमसन चोटिल होने के कारण बाहर हो गए हैं जिस कारण उनकी जगह राजस्थान रॉयल्स की अगुवाई रियान पराग कर रहे हैं। साथ ही टीम ने संजू की जगह वैभव सूर्यवंशी को प्लेइंग इलेवन में शामिल किया है। वहीं लखनऊ ने भी एक बदलाव करते हुए आकाशदीप की जगह प्रिंस यादव को मौका दिया है। जहां रॉयल्स अब लगातार तीन मैच हार रहे हैं और उनकी प्लेऑफ की उम्मीदें खतरे में हैं। हाफवे मार्क पर सिर्फ दो जीत के साथ, संजू सैमसन की टीम आठवें स्थान पर है। 16 अंकों के प्रतिष्ठित अंक तक पहुँचने के लिए, जो आमतौर पर प्लेऑफ़ बर्थ को सुरक्षित करता है, ऋक्को अपने बचे हुए सात मैचों में से छह जीतने होंगे। प्रभावी रूप से प्रत्येक मैच को जीतना ज़रूरी हो जाएगा। जबकि दूसरी तरफ लखनऊ सुपर जायंट्स ऋषभ पंत की अगुवाई में मजबूत स्थिति में है। टीम पॉइंट्स टेबल में 8 अंक के साथ पांचवें नंबर पर है। रॉयल्स के खिलाफ इस मैच को जीतकर एलएसजी टॉप 4 में अपनी जगह को मजबूत करना चाहेगी।

वेस्टइंडीज की महिला क्रिकेट टीम का टूटा सपना, वर्ल्ड कप 2025 में खेलने का नही मिलेगा मौका

नई दिल्ली (एजेंसी)। वेस्टइंडीज की टीम के फैंस के लिए बुरी खबर है, दरअसल वेस्टइंडीज की महिला क्रिकेट टीम आईसीसी विमेंस वर्ल्ड कप 2025 में क्वालीफाई करने से चूक गई है। वेस्टइंडीज की टीम थाईलैंड के खिलाफ हुई मैच में रिकॉर्ड रन चेज करके भी मार्की इवेंट में खेल नहीं पाएगी। दरअसल, 9 अप्रैल से पाकिस्तान में आईसीसी विमेंस वर्ल्ड कप क्वालीफायर मुकाबले खेले जा रहे थे। आज आखिरी वेस्टइंडीज और थाईलैंड के बीच खेला गया। लाहौर के गद्दाफी स्टेडियम में हुए इस मैच में थाईलैंड की टीम ने पहले बल्लेबाजी की और 44.1 ओवरों में अपने सभी विकेट खोकर 166 रन बनाए थे। वेस्टइंडीज के वर्ल्ड कप के लिए क्वालीफाई करने के लिए किसी भी हाल में इस टारगेट को 11 ओवरों तक चेज करना था।

वेस्टइंडीज के बल्लेबाजों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया और 10.4 ओवरों में 4 विकेट खोकर 162 रन बना लिए थे। अब उन्हें पांचवीं गेंद पर चौका और छठी गेंद पर छक्का लगाने की जरूरत थी। पांचवीं गेंद पर चौका लगने से स्कोर लेवल हो जाता और फिर अगली गेंद पर छक्का लगते ही वेस्टइंडीज जीत दर्ज करते हुए टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई कर जाती। लेकिन यहां स्टेफनी टेलर से एक ऐसी गलती हो गई, जिसे शायद वो जिंदगी भर याद रखेंगी। टेलर ने पांचवीं गेंद पर चौका लगाने की बजाय छक्का लगा दिया और वेस्टइंडीज मैच जीत गई।

इसी तरह वेस्टइंडीज मैच जीतकर भी टूर्नामेंट में क्वालीफाई करने से चूक गई। बेहतर रन रेट के चलते बांग्लादेशी टीम पाकिस्तान के बाद वर्ल्ड कप 2025 के अपनी जगह पक्कीकरने वाली दूसरी टीम बन गई। बांग्लादेश ने 5 मैचों में 3 जीत दर्ज की और उसका नेट रेट 0.639 है। वहीं वेस्टइंडीज ने भी पांच में से तीन मुकाबलों में जीत हासिल की और उसका नेट रेट 0.626 है।

14 वर्षीय वैभव सूर्यवंशी ने आईपीएल डेब्यू में छक्का लगाकर रचा इतिहास, इन दिग्गजों की लिस्ट में हुए शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल में अपनी पहली ही गेंद पर छक्का लगाना किसी भी बल्लेबाज के लिए यादगार पल होता है। इस अनोखे क्लब में अब तक 10 बल्लेबाज शामिल हो चुके हैं और इस सूची में ताजा नाम है 14 वर्षीय साल के वैभव सूर्यवंशी का है जिन्होंने मौजूदा आईपीएल सीजन में ये कारनामा किया है। इस उपलब्धि की शुरुआत ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज रॉब क्विनी ने की जिन्होंने 2009 में अपनी पहली गेंद पर छ्काक

जड़ा। इसके बाद केवॉन कूपर, आंद्रे रसेल, कार्लोस ब्रैथवेट, अनिकेत चौधरी, जावोन रियरलेस, सिद्धेश लाड, महेश तीक्षणा और समीर रिजवनी ने इस सूची में अपना नाम दर्ज कराया। वैभव सूर्यवंशी जो राजस्थान रॉयल्स की ओर से खेलते हैं उन्होंने ने 19 अप्रैल 2025 को लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ अपनी पहली गेंद पर शार्दुल ठाकुर को छक्का जड़कर इतिहास रच दिया। मात्र 14 साल और 23 दिन की उम्र में ये उपलब्धि हासिल करने वाले वैभव न केवल इस सूची के 10वें बल्लेबाज बने बल्कि आईपीएल के सबसे युवा डेब्यूटेंट भी हैं।

नहीं पता कि हमने क्या गलत किया-पराग

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजस्थान रॉयल्स के कप्तान रियान पराग ने इंडियन प्रीमियर लीग में शनिवार को यहां लखनऊ सुपरजाइंट्स के खिलाफ लक्ष्य का पीछा करते हुए अधिकांश समय अच्छी स्थिति में होने के बावजूद दो रन की हार के बाद कहा कि उन्हें नहीं पता कि टीम ने क्या गलत किया। सुपर जाइंट्स के 181 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल की 52 गेंद में चार छक्कों और पांच चौकों से 74 रन की पारी की बदौलत रॉयल्स की टीम एक समय दो विकेट पर 156 रन बनाकर बेहद मजबूत स्थिति में थी लेकिन आवेश खान (37 रन पर तीन विकेट) की धारदार गेंदबाजी के सामने पांच विकेट पर 178 रन ही बना सकी।

आवेश ने 18वें ओवर में जायसवाल और पराग दोनों को आउट करके मैच का रुख सुपर जाइंट्स के पक्ष में मोड़ा। लखनऊ सुपर जाइंट्स ने इससे पहले एडेन मारक्रम की 45 गेंद में तीन छक्कों और पांच चौकों से 66 रन की पारी और आयुष बडोनी (50 रन, 34 गेंद, पांच चौके, एक छक्का) के साथ चौथे विकेट की उनकी 76 रन की साझेदारी से पांच विकेट पर 180 रन बनाए।

अब्दुल समद (नाबाद 30, 10 गेंद) ने पारी के अंतिम ओवर में संदीप शर्मा (51 रन पर एक विकेट) पर चार छक्कों से 27 रन जोड़े। पराग ने मैच के बाद कहा, ''भावनाओं को व्यक्त करना वाकई मुश्किल है। पता नहीं हमने क्या गलत किया। हम 18वें या 19वें ओवर तक मैच में बने हुए थे। मुझे नहीं पता। मैं खुद को दोषी मानता हूं। हमें 19वें ओवर में ही मैच खत्म कर देना चाहिए था। हमें एकजुट होकर खेलना होगा।'' पराग ने कहा कि सुपर जाइंट्स की पारी का आखिरी ओवर दुर्भाग्यपूर्ण था जिसमें 27 रन बने। पराग ने कहा, ''आखिरी ओवर दुर्भाग्यपूर्ण था। मुझे लगा कि हम उन्हें 165-170 पर रोक सकते थे। हमने 20 रन अधिक दे दिए लेकिन हमें लक्ष्य को हासिल करना चाहिए था।

निकोलस पूरन ने साई सुदर्शन से वापस छीनी

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 का लगभग आधा टूर्नामेंट खत्म हो चुका है। 19 अप्रैल को दो मुकाबले खेले गए, जिनमें चंद मिनटों के भीतर ऑरेंज कैप का लीडर बदला हुआ नजर आया। दरअसल, दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ 36 रनों की पारी खेल गुजरात टाइटंस के साई सुदर्शन ऑरेंज कैप की रेस में सबसे आगे निकल गए थे, लेकिन अब लखनऊ के निकोलस पूरन फिर से टॉप पर विराजमान हो गए हैं। राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ मैच में पूरन सिर्फ 11 रन बनाकर आउट हो गए। वहीं साई सुदर्शन ने दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ 36 रन बनाए, जिससे आईपीएल 2025 में उनके कुल रनों की संख्या 365 रन हो गई थी। वहीं निकोलस पूरन ने 7 पारियों में 357 रन बना लिए थे। राजस्थान के खिलाफ मैच में जैसे ही पूरन ने 9 रन बनाए, उन्होंने सुदर्शन को पछाड़ते हुए ऑरेंज कैप वापस छीन ली थी। चूंकि उन्होंने रॉयल्स के खिलाफ 11 रन बनाए, जिससे मौजूदा सीजन में उनके कुल रनों की संख्या 368 रन हो गई है। इसके साथ ही ऑरेंज कैप की दौड़ में साई सुदर्शन और निकोलस पूरन के बीच अब सिर्फ 3 रनों का अंतर रह गया है। पूरन ने 368 रन बना लिए हैं, वहीं साई सुदर्शन के अभी कुल 365 रन हैं। गेंदबाजी की बात करें तो गुजरात टाइटंस के गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा ने दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ घातक गेंदबाजी करते हुए चार विकेट झटके और इस सीजन की पर्पल कैप अपने नाम कर ली। कृष्णा ने अब तक सात मैचों में 14.35 की औसत से 14 विकेट चटकाए हैं। उन्होंने चेन्नई सुपर किंग्स के स्पिनर नूर अहमद को पछाड़ा है। जिनके भी 14 विकेट हैं, लेकिन औसत के मामले में कृष्णा आगे हैं। तीसरे स्थान पर आरसीबी के जोश हेजलवुड हैं, जिन्होंने 7 मैचों में 12 विकेट लिए हैं। साई किशोर और कुलदीप यादव के नाम 11-11 विकेट हैं और वे पांचवें और छठे नंबर पर बने हुए हैं।

केएल राहुल ने केविन पीटरसन का उड़ाया मजाक

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 के इस सीजन में दिल्ली कैपिटल्स बेहतरीन प्रदर्शन कर रही है। अब तक खेले गए 6 मैचों में से पांच जीतकर ये टीम अंक तालिका में टॉप पर है। अक्षर पटेल की अगुवाई वाली इस टीम ने हर विभाग में बेहतरीन प्रदर्शन किया है। चाहे वो बल्लेबाजी हो, गेंदबाजी या फिर फील्डिंग। टीम का आत्मविश्वास भी इस समय आसमान छू रहा है और अब ये प्लेऑप की सबसे प्रबल टीमों में से एक है। लेकिन मैदान ही नहीं बल्कि ड्रेसिंग रूम में भी इस टीम का माहौल बेहद पॉजिटिव और खुशनुमा है। खिलाड़ी न सिर्फ जीत का जश्न मना रहे हैं बल्कि एक-दूसरे के साथ मस्ती भी कर रहे हैं। इसका ताजा उदाहरण हाल ही में सामने आए एक वीडियो में देखा जा सकता है। जहां टीम के विकेटकीपर बल्लेबाज केएल राहुल ने मजाक में टीम के मेंटर केविन पीटरसन की टांग खींची।

गुजरात टाइटंस के खिलाफ पहले दिल्ली की टीम नरेंद्र मोदी स्टेडियम में अभ्यास सत्र के लिए पहुंची। वहां गुजरात के कप्तान शुभमन गिल की मुलाकात डीसी के मेंटर केविन पीटरसन से हुई। बातचीत के दौरान पीटरसन ने हंसी-ठिठोली करते हुए गिल से पूछा कि बताओ मेंटर का क्या रोल होता है?

तभी इस जवाब देते हुए पास में खड़े केएल राहुल ने चुटकी लेते हुए कहा कि, मेंटोर वो होता है जो सीजन के बीच में दो हफ्ते मालदीव चला जाता है। राहुल की इस बात पर वहां मौजूद सभी लोग यहां तक कि पीटरसन भी अपनी हंसी नहीं रोक पाए।

बता दें कि, 5 अप्रैल को सीएसके पर जीत के बाद पीटरसन व्यक्तिगत यात्रा पर मालदीव चले गए थे और इसके चलते वे 10 अप्रैल को आरसीबी के खिलाफ मुकाबले में टीम के साथ नहीं थे।

पाकिस्तान महिला टीम आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के लिए भारत नहीं जाएगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के अध्यक्ष मोहसिन नकवी ने शनिवार को घोषणा की कि उनकी महिला टीम इस साल के आखिर में होने वाले आईसीसी एकदिवसीय विश्व कप के लिए भारत नहीं जाएगी और इस साल की शुरुआत में स्वीकार किए गए हाइब्रिड मॉडल का पालन करते हुए अपने मैच किसी तटस्थ स्थल पर खेलेगी।हाल ही में जब पाकिस्तान ने आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी की मेजबानी की थी तो भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने दोनों देशों के बीच राजनयिक तनाव के कारण भारतीय टीम को सीमा पार भेजने से इनकार कर दिया था और उनके मैच दुबई में खेले गए थे। हाइब्रिड मॉडल पर सहमति बनी थी जिसके तहत भारत और पाकिस्तान के आईसीसी प्रतियोगिताओं की मेजबानी करने की स्थिति में दोनों को अपने मैच तटस्थ स्थल पर खेलने की अनुमति

होगी। नकवी ने कहा, ''जैसे भारत चैंपियंस ट्रॉफी में पाकिस्तान में नहीं खेला था और उसे तटस्थ स्थल पर खेलने की अनुमति दी गई थी, वैसे ही जो भी स्थल तय होगा हम वहां खेलेंगे। जब कोई समझौता होता है तो उसका पालन करना होता है।'' पीसीबी प्रमुख ने कहा कि टूर्नामेंट के मेजबान होने के नाते भारत और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) तटस्थ स्थल पर फैसला करेंगे। भारत 29 सितंबर से 26 अक्टूबर तक होने वाले इस टूर्नामेंट की मेजबानी करेगा जिसमें ऑस्ट्रेलिया गत विजेता है। नकवी ने पाकिस्तान की महिला टीम के विश्व कप के लिए क्वालीफाई करने के प्रभावशाली तरीके पर भी संतोष व्यक्त किया। लाहौर में आयोजित क्वालीफायर में पाकिस्तान ने अपने सभी पांच मैच जीते। उन्होंने आयरलैंड, स्कॉटलैंड, वेस्टइंडीज, थाईलैंड और बांग्लादेश को हराकर मुख्य दौर के लिए आसानी से क्वालीफाई किया जिसके लिए मेजबान भारत, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका और श्रीलंका पहले ही क्वालीफाई कर चुके हैं। नकवी ने कहा, ''टीम ने दिखाया कि घरेलू परिस्थितियों का फायदा कैसे उठाया जाए और एक इकाई की तरह कैसे खेला जाए। मुझे खुशी है कि महिला क्रिकेट टीम अच्छा प्रदर्शन कर रही है।'' उन्होंने कहा कि पीसीबी निश्चित रूप से महिला टीम के लिए उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन को देखते हुए विशेष पुरस्कार की घोषणा करेगा।

बाइक को टक्कर मारकर बस पलटी, 2 की मौत, पांच लोग घायल, 45 मिनट बाद पहुंची एम्बुलेंस

समय पर पहुंच जाती एम्बुलेंस तो बच सकती थी जान

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा से सेमरिया जा रही यात्रियों से भरी हुई बस बाइक को टक्कर मारकर अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसे में बाइक सवार दो युवकों की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि पांच यात्री घायल बताए गए हैं। हादसा रविवार शाम 4 के आसपास हरदुआ में हुआ। घटना की सूचना मिलते ही मौके पर सेमरिया थाना पुलिस पहुंची। जहां पुलिस ने राहत और बचाव कार्य करते हुए बस में फंसे हुए यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकाला। जबकि घायलों को इलाज के लिए अस्पताल भिजवाया है।

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक पूरा हादसा ओवरटेक करने के चक्कर में हुआ। जहां बस बाइक से आगे निकलना चाहती थी। इसी दौरान बाइक को टक्कर मारने के बाद बस पलट गई और ये हादसा हो गया।

सेमरिया निवासी नरेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि पूरी गलती तेज रफ्तार जा रही बस के चालक की थी, जिसने अत्यधिक रफ्तार के कारण वाहन से अपना नियंत्रण खो दिया, जिससे यह भीषण सड़क हादसा हुआ। प्रत्यक्षदर्शी के मुताबिक अगर सेमरिया के अस्पताल में उपचार की प्राथमिक व्यवस्थाएं भी होतीं तो शायद दो घायलों की जान बचाई जा सकती थी। नरेंद्र के मुताबिक सिस्टम के फेलियर ने सड़क हादसे में घायल हुए बाइक सवारों की जान ले ली। एंबुलेंस को भी फोन लगाया गया लेकिन हादसे की लगभग 45 मिनट के बाद भी कोई एंबुलेंस मौके पर नहीं पहुंची। नरेंद्र ने ही दोनों घायलों को अस्पताल पहुंचाया था।

सतना के बेड़ा पहाड़ में लगी भीषण आग, कई पेड़-पौधे जले

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना जिले में गर्मी के मौसम में आग का कहर जारी है। रविवार की दोपहर वन परिक्षेत्र मझगवां के पापड़चुआ स्थित बेड़ा पहाड़ में अचानक आग लग गई।

सूचना मिलते ही वन विभाग की टीम तुरंत मौके पर पहुंची। वन अमला और स्थानीय ग्रामीणों ने मिलकर आग बुझाने का काम शुरू किया। फायर ब्लोअर की मदद से आग पर काबू पा लिया गया। हालांकि, इससे पहले कई पेड़-पौधे जलकर नष्ट हो गए।

मझगवां रेंज के प्रभारी रेंजर विवेक सिंह के अनुसार, दोपहर में जंगल में आग लगने की सूचना मिली। उन्होंने तत्काल फायर ब्लोअर के साथ वन अमले को घटनास्थल पर भेजा। सभी के संयुक्त प्रयास से आग को बुझाया गया।

आग लगने के कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है। आशंका जताई जा रही है कि किसी व्यक्ति द्वारा जंगल में ज्वलनशील पदार्थ फेंकने से सूखी टहनियों में आग ने विकराल रूप ले लिया।

बदमाशों का आतंक, तिलकोत्सव से लौट रहे लोगों से मारपीट

गाड़ी रोककर कांच तोड़े, छत पर चढ़कर कूदे

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा में पुलिस के रात्रिकालीन चेकिंग अभियान के दौरान रीवा-प्रयागराज हाईवे पर बदमाशों की गुंडागर्दी का मामला सामने आया है। गढ़ थाना क्षेत्र के घूमा गांव में शनिवार देर रात दो वाहनों में सवार बदमाशों ने तिलकोत्सव से लौट रहे लोगों के साथ मारपीट कर उनकी जीप में तोड़फोड़ की। घटना का वीडियो रविवार को सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। घटना में सोहागी के मलपार निवासी कृपासिंधु शुक्ला अपने तीन साथियों के साथ तिलकोत्सव से वापस लौट रहे थे। रात करीब एक बजे जब उनकी जीप गढ़ थाने के घूमा गांव के पास पहुंची, तो दो लोगों ने हाथ दिखाकर उन्हें रोका। जैसे ही उन्होंने गाड़ी रोकी, आरोपियों ने छीना-झपटी शुरू कर दी।

पीड़ितों ने जब गाड़ी बढ़ाकर भागने का प्रयास किया तो दो फोर व्हीलर वाहनों में सवार आठ बदमाश वहां पहुंच गए। बदमाशों ने फिल्मी अंदाज में जीप सवारों को नीचे उतारकर उनकी पिटाई की और वाहन पर पत्थर व डंडे बरसाए। स्थानीय लोगों के पहुंचने पर आरोपी फरार हो गए। वायरल वीडियो में बदमाश न केवल पीड़ितों की पिटाई करते दिख रहे हैं, बल्कि एक आरोपी उनके वाहन पर चढ़कर कूदता भी नजर आ रहा है। घटना से इलाके में दहशत का माहौल है। पीड़ितों ने थाने में शिकायत दर्ज कराई है।

सोहागी थाना प्रभारी पवन शुक्ला ने बताया कि हमलावरों की पहचान की जा रही है और उनकी गिरफ्तारी के लिए टीम रवाना कर दी गई है।

नाबालिग पत्नी की हत्या का खुलासा, घर लेट आने पर दुपट्टे से घोटा गला

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। एक दिन पूर्व हुई नाबालिक पत्नी की हत्या का पुलिस ने खुलासा कर दिया है। पुलिस ने हत्या के आरोप में उसके पति को गिरफ्तार किया जिसने दुपट्टे से गला खोलकर हत्या करना स्वीकार किया है। पुलिस के खुलासे में हैरानी की बात यह है कि जिस आरोपी युवक ने नाबालिग पत्नी से प्रेम विवाह किया था। वह शादी के चंद महीनों बाद से ही उसके चरित्र पर संदेह करने लगा और पत्नी के अक्सर घर लेट आने पर उसने इस पूरी घटना को अंजाम दे डाला। हत्या का खुलासा नगर पुलिस अधीक्षक शिवाली चतुर्वेदी ने किया। बताया गया कि एक दिन पूर्व बिछिया थाना क्षेत्र स्थित कुठुलिया में किराए के मकान में रहने वाले सैफ खान के कमरे से दुर्गंध आने की सूचना पुलिस को दी गई थी। बिछिया पुलिस जब मौके पर पहुंची तो कमरे का ताला बाहर से बंद था और अंदर से दुर्गंध आ रही थी। पुलिस ने तुरंत मौके पर एफएसएल और फिंगर एक्सपर्ट की टीम को बुलाया और ताले को तोड़ा गया। जहां कमरे के भीतर एक महिला की लाश पड़ी हुई थी। लाश किराए से रहने वाले मोहम्मद सैफ उर्फ़ बुग्गा की पत्नी जासमीन उर्फ़ उल्फत जहां की थी। प्रथम दृष्ट्या मामला हत्या का प्रतीत होने पर पुलिस ने प्राथमिकी रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू की थी।

2 महिलाओं की छत से गिरकर हुई मौत

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा में घर की छत से गिरकर घायल हुई दो महिलाओं की मौत हो गई। दोनों ही महिलाओं की मौत की घटना दो अलग-अलग थाना क्षेत्रों में हुई है। जिनमें से एक महिला सीढ़ी से फिसल कर नीचे जा गिरी तो दूसरी छत से गिरी है। इन दोनों ही हादसों में गंभीर रूप से घायल हुई महिलाओं को उपचार के लिए संजय गांधी अस्पताल लाया गया। जहां दोनों ने अस्पताल पहुंचते ही दम तोड़ दिया। अस्पताल चौकी पुलिस द्वारा पंचनामा कारवाई कर शवों का पीएम कराया गया। घटनाएं रीवा शहर के चुराटा थाना क्षेत्र और बैकुंठपुर थाना क्षेत्र की है। घटना के संबंध में चोरहटा थाना क्षेत्र स्थित ग्राम कठार निवासी मृतका राजकुमारी विश्वकर्मा के परिजनों ने बताया कि शनिवार को राजकुमारी किसी काम से छत पर जा रही थी, तभी सीढ़ियों से फिसल कर वह नीचे जा गिरी। गंभीर रूप से घायल अवस्था में उन्हें उपचार के लिए संजय गांधी अस्पताल लाया गया जहां उपचारउन्होंने ने दम तोड़ दिया। वहीं दूसरी घटना बैकुंठपुर थाना क्षेत्र के हटवा गांव में हुई। परिजनों के मुताबिक अनूपा साकेत बीती शाम किसी काम से घर की छत पर गई थी जहां से वह नीचे जा गिरी। गंभीर रूप से घायल हुई महिला को संजय गांधी अस्पताल लाया गया जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के दौरान ही उसे मृत घोषित कर दिया।

शराब के लिए पैसे न देने पर सैलून में घुसकर मारपीट-तोड़फोड़

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शहर के सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र के रानी तालाब के पास सैलून में बदमाशों ने जमकर उत्पाद मचाया। बताया गया कि शराब पीने के लिए पैसा ना देने पर अज्ञात तीन बदमाशों ने दुकान में घुसकर मालिक के साथ जमकर मारपीट की। साथ ही हेयर कटिंग सैलून में तोड़फोड़ भी की। दरअसल बदमाश हफ्ता वसूली करने दुकान में पहुंचे थे। घटना शनिवार शाम की है, जिसका सीसीटीवी फुटेज रविवार सुबह सामने आया। फुटेज में बदमाश बेल्ट और लाठी डंडों से मारपीट करते साफ नजर आ रहे हैं। पूरे मामले में पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर बदमाशों की तलाश शुरू कर दी है। पुलिस जगह-जगह दबिश देकर बदमाशों का पता लगाने में जुटी हुई है। एसपी विवेक सिंह ने बताया कि मामला संज्ञान में आया है। मारपीट से संबंधित एक वीडियो भी मिला है। पूरे मामले में वैधानिक कार्रवाई की जा रही है।

मऊगंज में अवैध हथियार के साथ युवक गिरफ्तार

मऊगंज के बडकुडा बॉर्डर पर राहगीरों को डराने का आरोप, देशी कट्टा और बाइक जब्त

मीडिया ऑडीटर, मऊगंज (निप्र)। मऊगंज के हनुमना थाना क्षेत्र में रविवार को एक युवक को अवैध हथियार के साथ गिरफ्तार किया है।

आरोपी की पहचान मिर्जापुर के दुगरहा विध्यांचल निवासी मुकेश दुबे के रूप में हुई है। मुखबिर से मिली सूचना के अनुसार, बडकुडा बॉर्डर पर पल्लू यादव के ढाबे के पास एक युवक देसी कट्टा लहराकर लोगों को डरा रहा था। सूचना पर थाना प्रभारी अनिल काकडे पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस ने आरोपी के पास से एक देशी कट्टा और जिंदा कारतूस बरामद किया, जिसकी कीमत करीब 20 हजार रुपए है। इसके अलावा उसकी होंडा एसपी शाइन बाइक भी जब्त की गई, जिसकी कीमत करीब 50 हजार रुपए है।

पुलिस ने आरोपी के खिलाफ आर्म्स एक्ट में मामला दर्ज कर उसे न्यायालय में पेश किया गया। जहां से उसे जेल भेज दिया गया है।

मऊगंज सिविल अस्पताल कैंपस में एक और चोरी की वारदात

मीडिया ऑडीटर, मऊगंज (निप्र)। मऊगंज सिविल अस्पताल में एक और चोरी की वारदात सामने आई है। वार्ड आया निर्मला रजक के सरकारी आवास से चोर 50 हजार रुपए नगद और 2 लाख से अधिक के जेवरात समेत कई सामान चुरा ले गए।

निर्मला अपनी भतीजी की शादी में शामिल होने बच्चों के साथ सीधी जिले के मझौली गई थीं। 20 अप्रैल की सुबह जब वह घर लौटीं, तो घर का सामान बिखरा हुआ मिला। चोरों ने मेन गेट की कुंडी तोड़कर घर में प्रवेश किया। उन्होंने अलमारी और बक्से तोड़कर सोने-चांदी के जेवरात, डिनर सेट और मिक्सर मशीन चुरा लिए।

चोरों ने वारदात से पहले बगल में रहने वाले शशी पटेल के मेन गेट की सिटकनी बाहर से बंद कर दी। वे गैस सिलेंडर, इंडक्शन और पुराना मिक्सर सड़क पर छोड़कर फरार हो गए। यह अस्पताल कैंपस में चार दिन के भीतर तीसरी चोरी है। इससे पहले डॉक्टर पंकज पांडेय के आवास और दो पान की दुकानों में भी चोरी हुई थी। लगातार हो रही चोरियों से कर्मचारियों में दहशत का माहौल है। पुलिस ने मौके का निरीक्षण किया है और मामले की जांच शुरू कर दी है।

तराई अंचल में असामाजिक तत्वों ने बजरंगबली की मूर्ति को तोड़ा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले के तराई अंचल में असामाजिक तत्वों द्वारा बजरंगबली की मूर्ति को खंडित किए जाने का मामला सामने आया है। घटना सोहागी थाने के त्यौंथर तहसील अंतर्गत ग्राम पंचायत कोठरा खुर्द की है। घटना से ग्रामीणों में भारी आक्रोश है। उनके द्वारा आरोपियों के खिलाफ थाने में शिकायत भी दर्ज कराई गई है। पुलिस द्वारा एफआईआर दर्ज कर असामाजिक तत्वों की तलाश की जा रही है। वहीं खंडित की गई मूर्ति को स्थानीय सरपंच द्वारा टमस नदी में विसर्जित कर दिया गया है। ग्रामीणों के मुताबिक घटना तीन दिन पुरानी है, लेकिन अब तक असामाजिक तत्वों का कोई सुराग नहीं लगा है। जिससे ग्रामीणों का आक्रोश बढ़ता जा रहा है। ग्रामीण आरोपियों की जल्द से जल्द गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं।

ससुराल आए दामाद की दो महीने बाद नहर में मिली लाश

ससुर ने छोटे भाई पर लगाया हत्या का आरोप

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा में निमंत्रण पर ससुराल आए दामाद की नहर में लाश मिलने की घटना सामने आई है। [25] दामाद की मौत पर ससुर ने अपने ही छोटे भाई पर हत्या का संदेह जाहिर किया है। फिलहाल शव मिलने के बाद पुलिस द्वारा उसे कब्जे में लेकर संजय गांधी अस्पताल पहुंचाया गया। जहां पंचनामा कर पीएम की कारवाई की गई। हालांकि शख्स की मौत कैसे और किन परिस्थितियों में हुई है यह अब तक साफ नहीं हो सका है। घटना के संबंध में ग्राम बरसैता निवासी रामबकस पटेल ने बताया कि 25 फरवरी को उनके छोटे भाई समय लाल पटेल के रीवा शहर के रतहरा स्थित घर में भागवत कथा का आयोजन कराया गया था। उनके छोटे भाई ने यूपी के रेनूकोट में रहने वाले दामाद को भी निमंत्रण भेजा था। जो रीवा पहुंचने के बाद वह रहस्यमई ढंग से लापता हो गया। शनिवार को शहर से सटे सोनौरा बिलहा गांव स्थित नहर में एक लाश मिलने की सूचना प्राप्त हुई थी जहां मौके पर जाकर पाया कि लाश लापता चल रहे दामाद अरविंद कुमार पटेल की है।

पुलिस की वर्दी का काला सच, विश्वविद्यालय थाने के लिए वरदान बना बाईपास

अवैध वसूली का अड्डा बना बाईपास मार्ग, वाहनों को सेट कर लाखों का मैनेजमेंट बना रहे खाकी वाले गुंडे

वर्दी से भय खाते हैं मार्ग से निकलने वाले वाहन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। पुलिस की वर्दी को साफ और स्वच्छ दिखाने बॉलीवुड वाले सिम्बा, सिंघम और दबंग जैसी ब्लॉकबस्टर फिल्में बना रहे हैं इधर अपराधियों पर खौफ पैदा करने की सरकार ने आजादी भी दे रखी है साथ ही सरकार के इन सेवकों को तनख्वाह के रूप में मोटी रकम से नवाजा भी जाता है जिससे अपनी सिंघम वाली कार्य शैली से काम करते हुए ये साहब लोग किसी भी गलत स्थान पर अपना मैनेजमेंट न बनाए और हमेशा जनता के हित में उन्हें सुरक्षा देते हुए काम करें मगर दबंग पुलिस के रोल का इस्तेमाल जनता को परेशान करने के लिए किया जा रहा है और आम जनमानस सिम्बा की भांति अब भी पुलिस में बदलाव होने की उम्मीदें लगाए बैठी है।

ऐसा हम इसलिए भी कह रहे हैं कि क्योंकि सिंघम बन पुलिस की वर्दी में कुछ इस तरह के कलंक घूम रहे जो केवल अवैध कमाई के दम पर ही एसी लगे कमरे में सो रहे हैं और लाखों करोड़ों के मैनेजमेंट से समाज में आतंक का पर्याय बने हुए हैं।

दरअसल रीवा जिले में इन दिनों बदमाशों के हौसले उड़ान भर रहे हैं और इसका सीधा सा जो कारण निकलकर सामने आया है वह यह कि अगर उन्हें किसी भी मामले में पुलिस गिरफ्तार करती है तो साहब से उनका मैनेजमेंट होना तय है और मैनेजमेंट भी ऐसा बनेगा कि किसी को कानों कान खबर तक नहीं लगेगी जैसा कि आमतौर पर पुलिस विभाग से यह कारनामे सामने आते रहते हैं। और हो भी क्यों न क्योंकि इधर पुलिस को तो अपना रेट फिक्स करने का सिस्टम ही चाहिए होता। कोई कोरेक्स की बिक्री कराकर पैसे कमा रहा है तो कोई बाईपास में वाहनों से सेटिंग बनाकर उन्हें लूटने की कोशिश में जुटा हुआ है।

पुलिस की अवैध कमाई से जुड़ा हुआ ताजा मामला सामने आया है शहर को दूध देती गाय चोरहटा से रतहरा बाईपास से जहां विश्वविद्यालय थाने में तैनात एक साहब अपनी ड्यूटी की सेवाएं दे रहे हैं इस बीच साहब जी के द्वारा बाईपास से निकलने वाली हाईवा वाहनों को अवैध रूप से चलने का लाइसेंस देकर उनसे वैध कमाई की जा रही है तथा इस कमाई में आई राशि का उपयोग साहब किसी शासन के राजस्व में नहीं बल्कि अपने निजी उपयोग में कर रहे हैं।

बताया जा रहा है कि विश्वविद्यालय थाने की टीम के कुछ सदस्य इन दिनों बाईपास में ऐसे एक्टिव होकर काम कर रहे हैं कि वहां से हैवी वाहनों का निकलना भी दूभर हो रहा है अगर वह इन्हें एंट्री के नाम की राशि नहीं देते हैं तो फिर इसकी भारी कीमत वाहन मालिकों को चुकानी पड़ती है। जिसके लिए पुलिसिया लोग वाहन के पहिए से हवा तक निकाल देते हैं जिससे गाड़ी आगे न बढ़ सके और इनका मैनेजमेंट फिक्स हो सके।

मैहर में सड़क हादसे से नाराज ग्रामीणों ने हाइवा में लगाई आग

मीडिया ऑडीटर, मऊगंज (निप्र)। मैहर जिले के अमरपाटन थाना क्षेत्र में [23] शनिवार की देर रात करीब साढ़े 12 बजे सड़क हादसे से नाराज ग्रामीणों ने हाइवा वाहन में आग लगा दी। घटना की सूचना के बाद मौके पर पहुंचे अमरपाटन टीआई केपी त्रिपाठी ने फायर ब्रिगेड को खबर की, लेकिन दमकल वाहन नहीं पहुंचा, जिसके बाद टीआई समेत मौजूद पुलिस बल ने बाल्टियों से पानी डालकर आग पर काबू पाने की कोशिश की, लेकिन तब तक हाइवा जलकर खाख हो चुका था। इस दौरान नाइट गश्त में निकले एसपी सुधीर अग्रवाल ने भी घटना स्थल का जायजा लिया। दरअसल बर्रेह गांव में कार और हाइवा में सीधी भिड़ंत हो गई थी, जिसमें कार सवार दो लोग घायल हो गए। जिन्हें डायल 100 से अमरपाटन सिविल अस्पताल भेजा गया। जहां से एक गंभीर घायल को रात में ही संजय गांधी अस्पताल रीवा रेफर कर दिया गया।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।